Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष-39 अंक-23
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 26 अगस्त से 01 सितम्बर 2015 तक
श्रावण शुक्ल एकादशी से भाद्रपद कृष्ण तृतीया सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

पाक की लाचार पृष्ठ- 3
फ्रिज में कहाँ वह पृष्ठ- 4
श्री कृष्ण जन्माष्टमी पृष्ठ- 5
BALANCED ARGUMENTS पृष्ठ- 9
बयानवीर भी हुए पृष्ठ- 12

जन्माष्टमी की शुभकामनाएं

सभी देशवासियों व पाठकों को जन्माष्टमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। भगवान श्रीकृष्ण आप सभी को स्वस्थ, सानन्द व समृद्ध रखें।

चन्द्र प्रकाश कौशिक राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

२०२० तक भारत को अपने कब्जे में करना चाहता है आईएसआईएस

भारत सरकार आंतक को रोकने के पर्याप्त उपाय करे–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

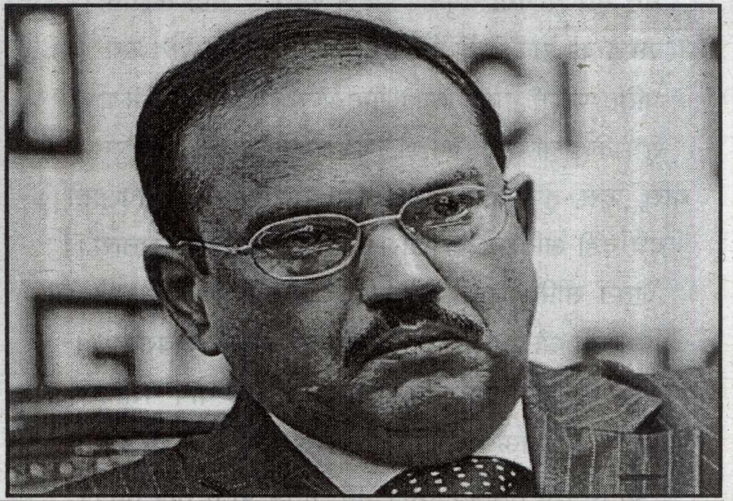

इस्लामिक स्टेट पर एक नयी पुस्तक में दिए एक नक्शे के मुताबिक इस दुर्दांत आतंकी संगठन की योजना दुनिया के बड़े हिस्से में अगले पांच साल में अपना प्रभुत्व कायम करने की है। जिसमें लगभग समूचा भारतीय उपमहाद्वीप शामिल है। नक्शे के मुताबिक इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक और सीरिया (आईएसआईएस) की योजना मध्य पूर्व, उत्तर अफ्रीका, अधिकांश भारतीय उप महाद्वीप और यूरोप शेष पृष्ठ 11 पर

सीजफायर उल्लंघन तत्काल बंद हो, भारत-पाक एनएसए स्तर की वार्ता रद्द हो - अखिल भारत हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने पाकिस्तान के द्वारा सीजफायर का लगातार उल्लंघन करने व लगातार फायरिंग कर निर्दोष भारतीयों की हत्या का तीव्र विरोध किया है तथा केंद्र की राजग सरकार से पाकिस्तान के साथ होनेवाली एनएसए स्तर की वार्ता को तत्काल रद्द करने की मांग की है। उन्होंने केंद्र सरकार से पूछा है कि आखिर कबतक भारतीय सैनिकों व नागरिकों की हत्या होते रहेगी। इसे तत्काल रोकना होगा।हमें अपनी पाकिस्तान नीति पर पुनर्विचार करनी चाहिए। भारत पाकिस्तानी सेना, आईएसआई और कट्टरपंथी ताकतों पर भरोसा करते रहेगा और धोखा खाते रहेगा। भारत की नीति में बदलाव लाना होगा। भारत के साथ अच्छे रिश्ते चाहने वाले पाकिस्तानी को भारत आने ही नहीं दिया जाता है, ताकि दोनों देशों में रिश्ते सुधर ही नहीं सके। जब तक पाकिस्तानी सेना का बर्चस्व समाप्त नहीं हो जाता है तब तक दोनों देशों के बीच मधुर रिश्तों की बात बेमानी है। पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने का भारत सरकार का प्रयास मूर्खतापूर्ण व अव्यावहारिक है। पाकिस्तानी सेना चाहती ही नहीं है कि रिश्तों में सुधार आये।यदि दोनों देशों के सम्बन्ध सुधर गए तो पाकिस्तानी सेना की लूट–खसोट, भ्रष्टाचार, आतंक की फैक्ट्री ही बंद हो जायेगी, जिसे वह होने नहीं देगा। इसलिये उसके साथ किसी भी प्रकार की वार्ता अनावश्यक व व्यर्थ है। भारत सरकार को पाकिस्तान को तोड़कर चार टुकड़ों में करके सिन्ध, बलूचिस्तान व नार्थ–वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स को आजाद करानी चाहिए। इस कार्य को अंजाम देने के लिए सिन्ध, बलूचिस्तान व फ्रंटियर प्रोविन्स की आजादी के लिये संघर्षरत शेष पृष्ठ 11 पर

गो चालीसा

श्री चरणों की वन्द्रना, करूँ नवाऊँ शीश।
सुमिरूँ गणपति शारदा, देहुँ मोहि आशीष।।
बुद्धि नहीं विद्या नहीं (मैं) हूँ बिल्कुल अज्ञान।
गौ महिमा कह सकूँ, ऐसा दो वरदान।।

जय सुरभि जय जय कल्याणी। महिमा अमित न जाय बखानी।।
जय जय धेनुरूप जय माता। अशुभ निवारण सब सुख दाता।।
विष्णु प्रिया तुझ पर बलिहारी। कृष्ण कन्हैया को अति प्यारी।।
जब जब तुझ पर संकट आया। आकर प्रभु ने उसे मिटाया।।
तेरे ही कारण नारायण। आते दुष्टों को संहारण।।
ग्वाला बनकर गाय चराई। गोपाला निज नाम धराई।।
सिंधु सुता तुम मंगल करनी। कलिमल कलुष सकल दुख हरनी।।
सत्य, ज्योति, अमृत, श्री कारिणी। असत, मृत्यु, तप, पाप निवारणी।।
रामे रोम ऋषि मुनि विराजे। सारे तीरथ इसमें साजे।।
सूर्य चंद्र नयनों में बसते। चरण कमल में शेष गरजते।।
मुख मण्डल पावक का वासा। पूरी करती सबकी आशा।।
गोमय में है लक्ष्मी मैया। ऐसी प्यारी है वह गैया।।
तीनों देव श्रृंग में रहते। गले पुरन्दर सब कोई कहते।।
गौ विग्रह में वेद है चारों। सेवा कर परलोक संवारो।।
थनों में चारों सागर रहते। हम तो क्या सब ग्रन्थन कहते।।
नासा पण्सुख का है वासा। उदर शैल सब करत निवासा।।
धेनु मूत्र में गंगा यमुना। अटल सत्य हैं, नहीं कल्पना।।
बछड़े को सब नन्दी कहते। नन्दीश्वर नन्दी संग रहते।।
पतित पावनी गंगा मैया। गोमुख से निकली मेरे भैया।।
सूर्य केतु नाड़ी के कारण। दूध स्वर्णमय रोग निवारण।।
घास, फूस, तृण, पत्ते खाती। सुधा सरिस पय हमें पिलाती।।
दूध दही अतिशय गुणकारी। सेवन करते सब नरनारी।।
जितने सात्विक गुण हैं प्यारे। दूध दही घी में हैं सारे।।
पंचगव्य औषधि प्रसादा। पीवत हरे सकल अवसादा।।
घर आंगन गोमय से पावन। गोमय है सब दोष नशावन।।
गोबर से उपजाऊ धरती। पौष्टिक अन्न धन से घर भरती।।
कामधेनु तुम पावन सेतु। घृत गोमय दीन्हें हवि हेतु।।
परमारथ स्वास्थ्य सब रसते। गौ की पूजा जो नित करते।।
वैतरणी की है यह नौका। मत चूको सेवा का मौका।।
दरसन परम सकल चौका। गौ पद रज है मंगलकारी।।
इस रज का नित तिलक लगाये। चारि पदारथ वो नर पाये।।
नित्य सवेरे गौ की सेवा। करने से मिलता है मेवा।।
मातृभाव से सदा निहारे। ममता की प्रतिमूर्ति प्यारे।।
संशय पारवती मन आया। शिव ने गौयश गाय सुनाया।।
एक समय गोधन ही धन था। इससे बढ़कर कुछ भी नहीं था।।
घर–घर रहती थी खुशहाली। जैसे मनती हो दिवाली।।
गौ से सारे वास्तु सुधरते। सकल अमंगल इससे डरते।।
जय–जय कामधेनु अति प्यारी। गो पर कृपा करहुं महतारी।।
भाव सहित चालीसा गावे। औरों को भी गाय सुनावे।।
सुख सम्पत्ति उसके घर आवे। दया प्रेम प्रभु का वो पावे।।

गोमाता हिरदय बसे, निसदिन आठो याम। विघ्न हरें, संकट कटे, सुधरे सारे काम।।
गोमाता हिरदय बसे, जब तक तन में प्राण। नित दरसन सेवा करें, जे चाहे कल्याण।।

लक्ष्मी नारायण मूँधड़ा

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह कुछ लोग व्यक्तिगत व व्यावसायिक सम्बन्धों के बीच व्यस्त रहेंगे। नौकरी वाले जातक स्थानान्तरण को लेकर मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। अतीत में किये गये कार्यों का लाभ मिलेगा। ऑफिस का जिम्मेदारी वाला भार लेने से बचें अन्यथा परिस्थितियों को नियंत्रण में कर पाना मुश्किल हो जायेगा।

वृष - इस सप्ताह कुछ इच्छाओं की पूर्ति होगी तथा कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त उपलब्धियों से आप सभी परिस्थितियों में सहज महसूस करेंगे। ऑफिस में सहकर्मियों और अधीनस्थ व्यक्तियों का साथ आनन्दायक रहेगा। समय का दुरूपयोग करने से इस समय बचना होगा।

मिथुन - इस सप्ताह कुछ लोग जोखिम भरे कार्यों को करने से बचें। इस समय क्रोध पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये अपनी बात सबके समक्ष रखने का प्रयास करें। नवयुवक अपने कैरियर को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे।

कर्क - इस सप्ताह आपको ऐसे कार्य करने पड़ेगें जिन्हें आप करना नहीं चाहते हैं। कुछ लोगों के परिवार में दुख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार हैं।

सिंह - इस सप्ताह आपको भावनात्मक दुःख का अहसास होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है, अन्यथा समस्यायें घेर सकती हैं। किसी नजदीकी व्यक्ति को अधिक महत्व न दें तो हितकर रहेगा। आपके परिश्रम के दूरगामी परिणाम लाभदायक रहेंगे। स्वास्थ्य को लेकर मन चिन्तित रह सकता है।

कन्या - इस सप्ताह परिश्रम को निरन्तर करना पड़ेगा जिसे आप टालना चाहें तो भी टाल नहीं सकते हैं। किसी चीज का अन्तर नजर आ रहा तो इसका प्रतिरोध करना व्यर्थ रहेगा। कुछ संस्थाओं से अनुबन्ध करने के अवसर उपलब्ध होंगे।

तुला - इस सप्ताह इस राशि वाले लोग अत्यन्त कष्ट की स्थिति में रह सकते हैं। अतः इससे बचने के लिये नकारात्मक सोच को हावी न होने दें। व्यवसायिक लोगों के साथ नयें अनुबन्ध करने के अवसर प्राप्त होंगे।

वृश्चिक - इस सप्ताह पुरानी समस्याओं का समाधान होने के आसार हैं। पैतृक सम्पत्ति में हिस्सेदारी मिलने पर नये प्लानों को सक्रियता प्रदान करेंगे। घर व परिवार में चला आ रहे आपसी विवाद में कुछ कमी होने की आशंका नजर आ रही है।

धनु - आर्थिक उपलब्धियों के लिये नकारात्मक व भावनात्मक सोच को बदलना ही हितकर रहेगा। इस सप्ताह नये लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को बखूबी निभायें अन्यथा टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मकर - इस सप्ताह पति व पत्नी के आपसी नासमझी के कारण पूरे परिवार में तनाव का माहौल बना रह सकता है। आप अपनी जिम्मेदारियों से मुँह न मोड़ें तथा उनका डटकर मुकाबला करें तभी अपने आपको साबित कर पायेंगे।

कुम्भ - इस सप्ताह आप कुछ बातों को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे जिसके कारण आपका किसी कार्य में मन नहीं लगेगा। नौकरी व व्यवसाय में प्रगति करने के लिए आपको अभी कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है।

मीन - घर व ऑफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ हॅसी–मजाक में समय व्यतीत होगा। किसी भी कार्य में अस्थाई तौर पर रूकावटें महसूस होंगी परन्तु अन्तिम चरण में सफलता अवश्य मिलेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्।।

क्योंकि समबुद्धि से युक्त ज्ञानी जन कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर जन्म रूप बन्धन से मुक्त हो निर्विकार परमपद को प्राप्त हो जाते हैं।।५१।।

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।

जिस काल में तेरी बुद्धि मोह रूप दलदल को भलीभाँति पार कर जाएगी, उस समय तू सुने हुए और सुनने में आने वाले इस लोक और परलोक सम्बन्धी सभी भोगों से वैराग्य को प्राप्त हो जायेगा।।५२।।

श्रुतिविप्रतिपत्रा ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।।

भाँति–भाँति के वचनों को सुनने से विचलित हुई तेरी बुद्धि जब परमात्मा में अचल और स्थिर ठहर जायगी, तब तू योग को प्राप्त हो जायेगा अर्थात् तेरा परमात्मा से नित्य संयोग हो जायेगा।।५३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 26 अगस्त से 01 सितम्बर 2015 तक

अध्यक्षीय

पाक की लाचार सरकार

भारत-पाकिस्तान के बीच आतंकवाद से उपजी कड़वाहट एक बार फिर सामने है। उधमपुर में जम्मू–श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर दो आतंकियों ने बीएसएफ की टुकड़ी पर हमला किया। इस हमले में दो जवान शहीद हो गए। जवाबी कार्रवाई में एक आतंकी मारा गया जबकि दूसरे ने खुद के बचाव के लिए गांव के तीन लोगों को बंधक बना लिया। वह सशस्त्र था, लेकिन बंधकों ने हिम्मत दिखा कर उसकी पकड़ से मुक्त होने और उसे पकड़ने की कोशिश की, जिसमें वे कामयाब रहे। उधमपुर में हमले के बाद जिंदा पकड़े गये पाकिस्तानी आतंकी नावेद उर्फ कासिम उर्फ उस्मान के फैसलाबाद निवासी पिता ने पुष्टि कर दी है कि वह उसका बेटा है। नावेद के पिता ने यह भी बताया है कि लश्कर–ए–तैयबा ने कुछ अन्य आतंकियों के साथ उसके बेटे को भारत में हिंसात्मक गतिविधियों के लिए भेजा था। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि एक पिता की इस स्वीकारोक्ति के बावजूद पाकिस्तान सरकार यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि जीवित पकड़ा गया आतंकी पाकिस्तान का नागरिक है। मुंबई हमले के आरोपी कसाब और उसके साथियों के बारे में भी पाकिस्तान का यही रवैया रहा था। भारत द्वारा मुंबई हमले से संबंधित विस्तृत दस्तावेज और सबूत पेश करने के बाद पाकिस्तान के सामने कोई बहाना नहीं रह गया था। क्या पाकिस्तान कसाब की तरह ही अब कासिम के बारे में भी अकाट्य सबूतों की फाइल का इंतजार कर रहा है। भारत के खिलाफ आतंक को शह देने की पाकिस्तान की दशकों पुरानी नीति अब भी बदस्तूर जारी है। एक पखवाड़े में हुए तीन बड़े आतंकवादी हमलों से यह बात सिद्ध होती है। पाकिस्तान द्वारा समर्थित और प्रशिक्षित आतंकियों ने सैकड़ों लोगों का खून बहाया है और अस्थिरता पैदा करने के षडयंत्र रच रहे हैं। मुंबई में १९९३ और २००८ में हुए हमलों के जिम्मेवार पाकिस्तान में खुलेआम भारत के विरुद्ध भड़काऊ बयान देते रहते हैं। हाफिज सईद, जकीउर रहमान लखवी, मौलाना मसूद अजहर, दाऊद इब्राहिम, टाइगर मेमन जैसे अनेक नाम हैं, जिन्हें पाकिस्तानी सेना, इंटेलिजेंस एजेंसियों और विभिन्न राजनीतिक दलों का संरक्षण मिला हुआ है। अलगाववादी और चरमपंथी गुटों को मिलनेवाली पाकिस्तानी मदद के अकाट्य सबूत हैं। दक्षिण एशिया समेत कई देशों में दहशतगर्दी को पाक खुफिया एजेंसी द्वारा संचालित किया जाता रहा है। अलकायदा का मुखिया ओसामा बिन लादेन और तालिबान का प्रमुख मुल्ला उमर पाकिस्तान में ही मारे गये हैं। पाकिस्तानी सरकार और समाज को अब यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि भारत को लहू–लुहान करने की उसकी कवायद उसे भी तबाही की ओर ले जा रही है। भारत को भी पाकिस्तान–संबंधी रणनीति एवं कूटनीति पर नये सिरे से गौर करना चाहिए। अपनी जमीन पर लगातार हो रहे हमलों और सीमा पार से फायरिंग की पृष्ठभूमि में शांति व सहभागिता की वार्ताएं कारगर नहीं हो सकती हैं। जरूरी है कि सरकार पाकिस्तान की खतरनाक शरारतों का कठोरता से जवाब दे। कासिम की जो तस्वीरें और थोड़े बहुत बयान सामने आए हैं, उसमें उसने खुद को पाकिस्तान का नागरिक बताया और किस तरह, किस मकसद के लिए वह भारत आया, यह भी बतलाया। पाकिस्तान से भारत में आतंकवादी आते रहे हैं और इसके सबूत पहले कई बार मिले हैं। हाल ही में मुंबई हमलों के बाद गठित संघीय जांच एजेंसी के प्रमुख तारिक खोसा ने खुलासा किया कि मुंबई पर हमले की साजिश पाकिस्तान में रची गई और उसमें लश्करे तैयबा का हाथ है। खोसा ने जो खुलासा किया वह नया नहींहै। भारत बहुत पहले से कई सबूत पाकिस्तान को दे चुका है। लेकिन पाकिस्तान ने हमेशा इन्कार और असहयोग का रवैया ही अपनाया है। अब भी कासिम मामले में पाकिस्तान ने नेशनल डाटाबेस एंड रजिस्ट्रेशन अथॉरिटी के हवाले से कहा है कि नावेद या कासिम उसके देश का नागरिक नहींहै। पाकिस्तान का यह रवैया उसकी कमजोर इच्छाशक्ति को दर्शाता है। जिसके कारण वहां आतंकवाद का प्रसार बढ़ता जा रहा है। हथियार निर्माता कंपनियों का दबाव, विदेशी धन की सहायता, खुफिया एजेंसी और सेना का दबदबा इन सबके आगे वहां की निर्वाचित सरकार अमूमन विवश नजर आती है। पाकिस्तान में किस तरह आतंकी शिविर चलाए जा रहे हैं, यह किसी से छिपा नहींहै। इसके बावजूद वहां की सरकार यही दावा करते रहती है कि वह आतंकवाद से लडने के लिए प्रतिबद्ध है। इस खोखले दावे के गंभीर परिणाम उसे पेशावर जैसी घटनाओं में देखने मिले हैं, फिर भी वह लोकतंत्र को मजबूत करने और हथियारतंत्र को कमजोर करने के लिए कुछ खास नहींकर पा रही है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

भारतीय आयुर्वेदिक पद्धतियों को हथियाने का षड्यंत्र

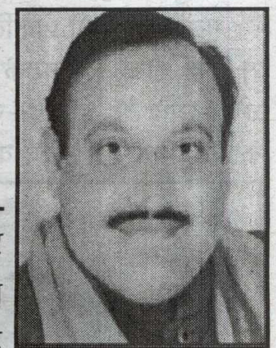

भारत ने एक ब्रिटिश कंपनी द्वारा हल्दी, देवदार की छाल और चाय की हरी पत्ती से बालों का झड़ना रोकने के भारत के पारंपरिक चिकित्सा उपाय को पेटेंट कराने के प्रयास को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार यूरोप की अग्रणी त्वचा रोग प्रयोगशाला–पानगिया लेबोरेटरीज लिमिटेड ने बालों को झड़ने से रोकने के लिये हल्दी, देवदार की छाल और चाय की हरी पत्ती के मिश्रण का पेटेंट कराने का प्रयास किया था जिसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत आने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की इकाई पारंपरिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय ने नाकाम कर दिया। भारत अब तक ऐसे करीब दो सौ प्रयासों को नाकाम कर चुका है जिनमें भारतीय आयुर्वेदिक पद्धतियों एवं चिकित्सा विधियों को हथियाने की कोशिश की गयी थी। यहाँ मिली जानकारी के अनुसार पारंपरिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय ने पाया कि यूरोपीय पेटेंट कार्यालय में मेसर्स पानगिया लेबोरेटरीज लिमिटेड ने इस विधि पर पेटेंट का आवेदन किया है। पुस्तकालय ने यूरोपीय पेटेंट कार्यालय को तत्काल पेटेंट पूर्व विरोध पत्र लिखा और ऐसे साक्ष्य भेजे जिनसे साबित होता है कि भारत में आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में हल्दी, देवदार की छाल और चाय की हरी पत्तियों का बालों के झड़ने के उपचार में प्रयोग होता रहा है। यह आवेदन फरवरी २०११ में किया गया था। पारंपरिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय ने पेटेंट आवेदन के वेबसाइट पर प्रकाशन के बाद १३ जनवरी २०१४ को यूरोपीय पेटेंट कार्यालय को साक्ष्य मुहैया कराये थे। इसके बाद २६ जून २०१५ को ब्रिटिश कंपनी ने अपना आवेदन वापस ले लिया। पारंपरिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय ने हाल ही में बहुराष्ट्रीय कंपनी कोलगेट पामोलिव द्वारा जायफल पर आधारित्त एक माउथवॉश फार्मूला पेटेंट कराने के प्रयास को नाकाम किया था।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

भारतीय बच्चो का करिश्मा

दुनिया की सबसे उंची चोटी माउंट एवरेस्ट के आधार शिविर पर पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोही होने का रिकॉर्ड शायद पांच साल का एक भारतीय लड़का और उसकी आठ साल की बहन के नाम हो जाएगा। ग्वालियर निवासी केदार्प शर्मा और रित्विका कल नेपाल के पूर्वोत्तर में ५,३८० मीटर की उंचाई पर स्थित आधार शिविर में सफलतापूर्वक पहुंच गए। शेरपा के मुताबिक दोनों भाई बहन के साथ उनके अभिभावक भी शिविर पहुंचे। दुनिया की सबसे उंची चोटी माउंट एवरेस्ट के आधार शिविर पर पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोही होने का रिकॉर्ड बनाने के साथ साथ ये दोनों इस उंचाई तक पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के भाई बहन भी बन गए। यह परिवार ८,८४८ मीटर उंचे एवरेस्ट के आधार शिविर पर पहुंचने वाला शायद पहला परिवार भी है। बच्चो का यह करिश्मा भारत के गौरव को बढ़ाने वाला है। हमे भारतीय बच्चों पर गर्व है। भारत सरकार पर्वतारोहण के लिये देश में आवश्यक सुविधायें प्रदान करें ताकि भारतीय बच्चें सफल हो सकें।

फ्रिज में कहाँ वह तृप्ति जो मिलती है मटके के पानी में!

घरों में फ्रिज क्या आया, मटके गायब हो गए मगर मिट्टी का मटका आज भी गरीबों का फ्रिज बना हुआ है। मटके के पानी को आयुर्वेद में भी महत्ता दी गई है। मटके का पानी प्राकृतिक रूप से ठंडा होता है। मटके में कई छोटे–छोटे छेद होते हैं–जो पानी को ठंडा करने में मदद करते हैं।

मटके के साथ कई प्रयोग किए गए हैं। अब यह सिर्फ साधारण मटका नहीं रह गया। हाल ही में मिट्टी से फ्रिज भी बनाया गया। मटके का पानी बेहद साफ, शीतल और अमृत जैसा होता है। फ्रिज का पानी भले ही ठंडा हो पर वह आपको ऊर्जा नहीं दे सकता। इस पानी में भरपूर ऊष्मा होती है जो शरीर को ऊर्जावान बनाए रखती है। गर्मियों में हम कई तरह की बीमारियों से रूबरू होते हैं। इन दिनों दूषित पानी पीने के कारण कई बीमारियाँ घर कर लेती हैं। मगर मटके के पानी में कीटाणुनाशक गुण पाए जाते हैं। जिससे शरीर के कीटाणु खत्म होते हैं। मटका पानी को १४ डिग्री तक ठंडा करने की क्षमता रखता है। इसका पानी हमें तरोताजा बनाता है। मटके का पानी गले के लिए भी बेहतर माना जाता है। फ्रिज का पानी गला खराब होने की वजह बन सकता है। मटके का पानी हमें बीमार नहीं होने देता। खांसी–जुकाम में भी मटके का पानी हमें नुकसान नहीं पहुँचाता। सुबह मटके का पानी पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है–साथ ही आँखों और दिल को भी स्वस्थ रखने में मदद करता है। आज जब हम पृथ्वी बचाओ, बिजली बचाओ जैसी बातें सुनते हैं तो फ्रिज की जगह मटके का इस्तेमाल करना बेहतर लगता है। कई घरों में फ्रिज होने के बावजूद मटका इस्तेमाल में लाया जाता है। हमें बच्चों को भी मटके के पानी की खासियत बतानी चाहिए ताकि वे भी इसका इस्तेमाल करें।

मटके में पानी रखने से पहले कुछ बातों का ध्यान जरूर रखें। बाजार में तरह–तरह की सुराही और मटके मौजूद हैं। सुराही की बजाय मटका पानी को ज्यादा ठंडा करता है। मटके में पानी रखने से पहले उसे अच्छी तरह साफ कर लें। ध्यान रहे उसे अंदर की तरफ से ज्यादा न रगड़ें वरना पानी ठंडा होना बंद हो जाएगा। धूल, कीटाणु से बचाने के लिए इसे हमेशा ढक कर रखें। मटके को खिड़की के पास रखने से पानी जल्दी ठंडा होता है। बहुत ज्यादा गर्मी में इस पर गीला कपड़ा बाँध कर रखें। पानी निकालने के लिए लंबे हैंडल का चम्मच इस्तेमाल करें। मटके के अंदर हाथ न डालें। आसानी के लिए अब इनमें टोंटी भी लगाई जाने लगी है। जिससे आप आसानी से ठंडा पानी निकालकर पी सकते हैं। तो पुरानी परम्परा को फिर से जीवित कीजिए और पानी को मटके में रखकर जब चाहे गले को तर कीजिए।

तब नहीं होंगे बाल रूखे अगर अपनायेंगे ये उपाय

आपकी खूबसूरती में बालों की अहम भूमिका होती है। यदि आप अपने बालों का पूरा ख्याल रखें तो आपके व्यक्तित्व में पूरा निखार आता है। बदलते मौसम के दौरान बालों से जुड़ी समस्यायें बढ़ जाती हैं। गर्मियों के दौरान शुष्क और तेज हवायें बालों की नमी को चुरा लेती हैं। आपको चाहिए कि अपने बालों की ओर जरा ध्यान दें ताकि आपके बाल निखरे और पोषित रहें। मौसम का रूखापन बालों को न बना दे रूखा, इसके लिए जानिए घरेलू उपाय :

कोकोनेट मिल्क : एक कप कोकोनेट मिल्क में दो चम्मच चने का आटा मिलाकर बालों में लगाएं और मसाज करें। पाँच मिनट बाद सिर को धो दें। इसे हफ्ते में कम से कम एक बार अवश्य आजमाएँ। इससे आपके बालों को जरूरी पोषण मिलेगा और वे खिले–खिले रहेंगे।

अरण्ड का तेल : एक चम्मच अरण्ड के तेल में एक चम्मच ग्लीसरीन, एक चम्मच सिरका और एक चम्मच हर्बल शम्पू मिलाएँ। कंडीशनर तैयार है। इसे बालों की जड़ों में लगाएँ और बीस मिनट तक छोड़ दें। उसके बाद बालों को धो डालें। नमी आने के साथ बाल स्वस्थ भी रहेंगे। इससे आप बालों से जुड़ी कई समस्याओं से बचे रहेंगे।

बादाम के तेल की मालिश : शाम को ऑफिस से लौटने के बाद बालों की बादाम या जैतून के गरम तेल से मालिश करें। बादाम के तेल की मालिश न केवल आपकी थकान दूर करेगी बल्कि साथ ही आपके बालों को भी स्वस्थ और सुंदर बनाएगी। ऑफिस से लौटकर अगर आप बादाम के तेल की मालिश करें तो आप सिरदर्द, अवसाद और थकान से बचे रहेंगे।

नारियल का तेल : एक चम्मच जासमिन के तेल में एक चम्मच नारियल का तेल मिलाएँ और इस मिश्रण को कुछ सेकंड के लिए गरम करें। रात में इससे बालों की मालिश करें और सुबह हर्बल शैम्पू से सिर धो डालें। इसे हफ्ते में दो बार आजमाया जा सकता है। नारियल के तेल में जरूरी विटामिन ई होता है जो बालों के लिए बेहद जरूरी माना जाता है। पुराने समय से ही नारियल तेल को बालों के लिए काफी उपयोगी माना जाता है।

आहार का रखें ध्यान : बालों का रूखापन शरीर में जिंक की कमी से आता है। अतः खाने में जिंकयुक्त भोज्य पदार्थों की मात्रा बढ़ाएँ। जैसे–बादाम, काजू, केला, दही आदि। ये खाद्य पदार्थ न केवल आपके संपूर्ण स्वास्थ्य को अच्छा रखेंगे, बल्कि साथ ही साथ आपके बालों को भी जरूरी पोषण देंगे।

खट्टे मीठे बेर

पुत्र जीवकी पतंजलि, भांति भांति उपयोग।
मन वांछित सुत "राजगुरु", पा सकते हैं लोग।।
पुत्र जीवकी दवा ले, अगर रायता डाल।
पुत्र जनेगा "राजगुरु", जैसे केजरीवाल।।
पुत्र–जीवकी डागफुड, के संग मिश्रित खाय।
तब दिग्गी सा "राजगुरु", बेटा निश्चय पाय।।
पुत्र–जीवकी दवा ले, सतुआ संग सपोड़।
मिले विदूषक, "राजगुरु", लालू पूत हँसोड़।।
पुत्र–जीवकी दवा ले, भूसा के संग पीस।
सुत राहुल सा "राजगुरु", निश्चय दे जगदीश।।
पुत्र–जीवकी पतंजलि, सेवे गोंद भिंगोय।
मौनी बेटा "राजगुरु", मनमोहन सा होय।।
पुत्र–जीवकी छान ले चोली बसन बसन्त।
रसिया बेटा "राजगुरु", रामपाल सा सन्त
पुत्र–जीवकी छौंक दे, कुत्ते दुम का केश।
लेवे, सुत हो "राजगुरु", स्वामी अग्निवेश।।
अलगावी बिष बूँद संग, पुत्र–जीवकी पान।
आवैसी सुत "राजगुरु", जुड़वां आजमखान।।
पुत्र–जीवकी मिश्र ले, रेंडी लिपटी बेल।
हो अजीतसिंह "राजगुरु", मात्र अवसरी मेल।।

आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर

पिज्जा में है गोमांस!

पैकेट पर लिखा है फिर भी खाने वाले दीवाने

क्या आप पिज्जा खाने के शौकीन हैं और आपकी पिज्जा खाने की जिद है तो जरा संभलकर इसका चयन करें, क्योंकि इसमें गोमांस की परत होती है। पैकेट पर इस बारे में साफ–साफ लिखा है। इतना ही नहीं जिस पैकेट में यह खाद्य सामग्री है उस पर उत्पाद के वेज या नानवेज होने की पुष्टि करने वाला लोगो तक नहीं है। इन दिनों बच्चे जाने–अनजाने गोमांस का सेवन कर रहे हैं। यह गोमांस उन्हें पिज्जा के मम्मी पैक के जरिए दिया जा रहा है। १५ ग्राम के छोटे से रंग–बिरंगे पैकेट में बंद यह पिज्जा हर गली व चौराहे पर बनी दुकानों पर धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। इस पैकेट में पाँच स्लाईस होते हैं जिसमें एक–एक परत गोमांस की लगी होती है। इस बारे में कंपनी ने अपने उत्पाद पर स्पष्ट शब्दों में लिखा है। उत्पाद को तैयार करने के लिए प्रयोग की गई सामग्री में इसका उल्लेख है। रेपर पर अंग्रेजी में बीफ जिलेटिन शब्द भी लिखा हुआ है। इसका अर्थ है, गोमांस की परत। यह संदेश बेहद महीन शब्दों में छपा है।

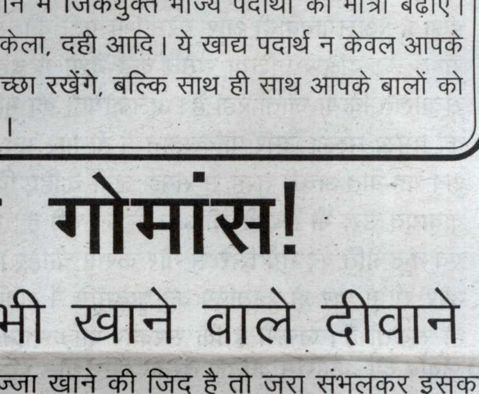

चूँकि ज्यादातर बच्चे न तो अंग्रेजी जानते हैं और न ही खाने–पीने की चीजों में सावधानी बरतते हैं।

ऐसे में बच्चे अनजाने में ही गोमांस का सेवन कर रहे हैं। इसकी बिक्री से कंपनी मालामाल हो रही है। नागरिकों द्वारा प्रशासन से इस बारे में उचित कार्यवाही करने की माँग की गई है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का दिन बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कृष्ण जन्मभूमि पर देश–विदेश से लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है और पूरे दिन व्रत रखकर नर–नारी तथा बच्चे रात्रि १२ बजे मन्दिरों में अभिषेक होने पर पंचामृत ग्रहण कर व्रत खोलते हैं। कृष्ण जन्म स्थान के अलावा द्वारकाधीश, बिहारी जी एवं अन्य सभी मन्दिरों में इसका भव्य आयोजन होता है, जिनमें भारी भीड़ होती है। इस वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी आगामी १७ अगस्त को है। भगवान श्रीकृष्ण विष्णु जी के अवतार माने जाते हैं। यह श्री विष्णु का सोलह कलाओं से पूर्ण भव्यतम अवतार है। श्रीराम तो राजा दशरथ के यहाँ एक राजकुमार के रूप में अवतरित हुए थे, जबकि श्रीकृष्ण का प्राकट्य आततायी कंस के कारागार में हुआ था। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में देवकी व श्रीवासुदेव के पुत्र के रूप में हुआ था। कंस ने अपनी मृत्यु के भय से बहन देवकी और वासुदेव को कारागार में कैद किया हुआ था। श्रीकृष्ण जन्म के समय घनघोर वर्षा हो रही थी। चारों तरफ घना अंधकार छाया हुआ था। श्रीकृष्ण का अवतरण होते ही वासुदेव–देवकी की बेड़ियाँ खुल गईं, कारागार के द्वार स्वयं ही खुल गए, पहरेदार गहरी निद्रा में सो गए। वासुदेव किसी तरह श्रीकृष्ण को उफनती यमुना के पार गोकुल में अपने मित्र नन्दगोप के घर ले गए। वहाँ पर नन्द की पत्नी यशोदा को भी एक कन्या उत्पन्न हुई थी। वासुदेव श्रीकृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर उस कन्या को ले गए। कंस ने उस कन्या को पटककर मार डालना चाहा। किन्तु वह इस कार्य में असफल ही रहा। श्रीकृष्ण ने सभी कुप्रयासों को विफल कर दिया। अंत में श्रीकृष्ण ने आततायी कंस को ही मार दिया। श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का नाम ही जन्माष्टमी

है। गोकुल में यह त्योहार 'गोकुलाष्टमी' के नाम से मनाया जाता है। श्रावण (अमान्त) कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण जन्माष्टमी या जन्माष्टमी व्रत एवं उत्सव प्रचलित है, जो भारत में सर्वत्र मनाया जाता है और सभी व्रतों एवं उत्सवों में श्रेष्ठ माना जाता है। कुछ पुराणों में ऐसा आया है कि यह भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है।

जन्माष्टमी मनाने का समय निर्धारण

सभी पुराणों एवं जन्माष्टमी सम्बन्धी ग्रन्थों से स्पष्ट होता है कि कृष्णजन्म के सम्पादन का प्रमुख समय है श्रावण कृष्ण पक्ष की अष्टमी की अर्धरात्रि (यदि पूर्णिमान्त होता है तो भाद्रपद मास में किया जाता है) यह तिथि दो प्रकार की है–१. बिना रोहिणी नक्षत्र की तथा २. रोहिणी नक्षत्र वाली।

जन्माष्टमी व्रत में प्रमुख कृत्य एवं विधियाँ

जन्माष्टमी व्रत में प्रमुख कृत्य हैं उपवास, कृष्ण पूजा, जागरण (रात का जागरण, स्तोत्र पाठ एवं कृष्ण जीवन सम्बन्धी कथाएँ सुनना) एवं पारण करना।

जन्माष्टमी पूजा विधि

श्रीकृष्ण जी की पूजा आराधना का यह पावन पर्व सभी को कृष्ण भक्ति से परिपूर्ण कर देता है। इस दिन व्रत–उपवास करने का विधान है। यह व्रत सनातन–धर्मावलंबियों के लिए अनिवार्य माना जाता है। इस दिन उपवास रखे जाते हैं तथा कृष्ण भक्ति के गीतों का श्रवण किया जाता है। घर के पूजागृह तथा मंदिरों में श्रीकृष्ण–लीला की झाकियाँ सजाई जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति अथवा शालिग्राम का दूध, दही, शहद, यमुना जल आदि से अभिषेक किया जाता है तथा भगवान श्रीकृष्ण जी का षोडशोपचार विधि से पूजन किया जाता है। भगवान का श्रृंगार करके उन्हें झूला झुलाया जाता है। श्रद्धालु भक्त मध्यरात्रि तक पूर्ण उपवास रखते हैं। जन्माष्टमी को रात्रि में जागरण, कीर्तन किए जाते हैं व अर्धरात्रि के समय शंख तथा घंटों के नाद से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को सम्पन्न किया जाता है।

संकल्प और प्राण प्रतिष्ठा

व्रती को किसी नदी (तालाब या कहीं भी) में तिल के साथ दोपहर में स्नान करके यह संकल्प करना चाहिए–'मैं कृष्ण की पूजा उनके सहगामियों के साथ करूँगा' उसे सोने या चाँदी आदि की कृष्ण प्रतिमा बनवानी चाहिए, प्रतिमा के गालों का स्पर्श करना चाहिए और मंत्रों के साथ उसकी प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए। उसे मंत्र के साथ देवकी व उनके शिशु श्रीकृष्ण का ध्यान करना चाहिए तथा वासुदेव, देवकी, नन्द, यशोदा, बलदेव एवं चंडिका की पूजा स्नान, धूप, गंध, नैवेद्य आदि के साथ करनी चाहिए। तब उसे प्रतीकात्मक ढंग से जातकर्म, नाभि छेदन, षष्ठी पूजा एवं नामकरण संस्कार आदि करने चाहिए। तब चन्द्रोदय (अर्धरात्रि के थोड़ी देर उपरान्त) के समय किसी वेदिका पर अर्घ्य देना चाहिए। यह अर्घ्य रोहिणी युक्त चन्द्र को भी दिया जा सकता है। अर्घ्य में शंख से जल अर्पण होता है जिसमें पुष्प, कुश, चन्दन लेप डाले हुए रहते हैं। यह सब एक मंत्र के साथ में होता है। इसके उपरान्त व्रती को चन्द्र का नमन करना चाहिए और दण्डवत झुक जाना चाहिए तथा वासुदेव के विभिन्न नामों वाले श्लोकों का पाठ करना चाहिए और अन्त में प्रार्थनाएँ करनी चाहिए।

रात्रि जागरण और प्रातः पूजन

व्रती को रात्रि भर कृष्ण की प्रशंसा के श्त्रोतों, पौराणिक कथाओं, गानों एवं नृत्यों में संलग्न रहना चाहिए। दूसरे दिन प्रातःकाल के कृत्यों के सम्पादन के उपरान्त, कृष्ण प्रतिमा का पूजन करना चाहिए, ब्राह्मणों को भोजन देना चाहिए, सोना, गौ, वस्त्रों का दान, 'मुझ पर कृष्ण प्रसन्न हों' शब्दों के साथ करना चाहिए–

यं देवं देवकी देवी
वसुदेवादजीजनत्।
भौमस्य ब्रह्मणों गुप्त्यै
तस्मै ब्रह्मात्मने नमः।।
सुजन्-वासुदेवाय
गोब्राह्मणहिताय च।
शान्तिरस्तु शिव चास्तु।।

का पाठ करना चाहिए तथा कृष्ण प्रतिमा किसी ब्राह्मण को देनी चाहिए और पारण करने के उपरान्त व्रत को समाप्त करना चाहिए।

पारण

प्रत्येक व्रत के अन्त में पारण होता है, जो व्रत के दूसरे दिन प्रातः किया जाता है। जन्माष्टमी एवं जयन्ती के उपलक्ष्य में किये गये उपवास के उपरान्त पारण के विषय में कुछ विशिष्ट नियम हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण कालनिर्णय में आया है कि जब तक अष्टमी चलती रहे या उस पर रोहिणी नक्षत्र रहे तब तक पारण नहीं करना चाहिए जो ऐसा नही करता अर्थात **जो ऐसी स्थिति में पारण कर लेता है वह अपने किये कराये पर ही पानी फेर लेता है और उपवास से प्राप्त फल को नष्ट कर लेता है।** अतः तिथि तथा नक्षत्र के अन्त में ही पारण करना चाहिए।

उद्यापन एवं पारण में अंतर

पारण के उपरान्त व्रती **'ओं भूताय भूतेश्वराय भूतपतये भूतसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः'** नामक मंत्र का पाठ करता है। कुछ परिस्थितियों में पारण रात्रि में भी होता है, विशेषतः वैष्णवों में, जो व्रत को नित्य रूप में करते हैं न कि काम्य रूप में। 'उद्यापन एवं पारण' के अर्थों में अंतर है। एकादशी एवं जन्माष्टमी जैसे व्रत जीवन भर किये जाते हैं। उनमें जब कभी व्रत किया जाता है तो परण होता है, किन्तु जब कोई व्रत केवल एक सीमित काल तक ही करता है और उसे समाप्त कर लेता है तो उसकी परिसमाप्ति का अन्तिम कृत्य है उद्यापन।

ध्यानचंद और हिटलर

हॉकी के जादूगर ध्यानचंद के जन्म दिन (२६ अगस्त) पर विशेष

सन् १९३६ बर्लिन ओलंपिक, ध्यानचंद की अगुआई में भारतीय हॉकी टीम ने जर्मनी को उसके घर में ८–१ से करारी शिकस्त देकर स्वर्ण पदक जीता। फाइनल देखने के लिए स्टेडियम में जर्मन तानाशाह

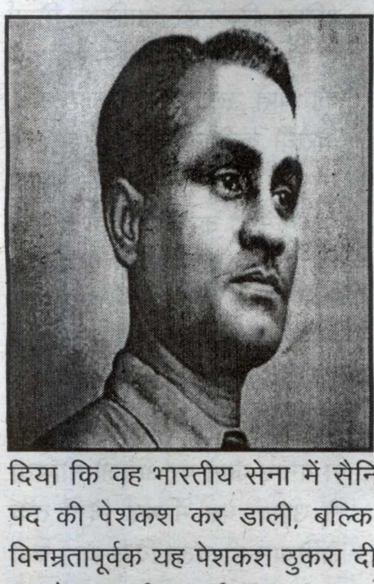

एडोल्फ हिटलर भी मौजूद थे। और विजेता टीम को उनके हाथों स्वर्ण पदक दिए जाने थे, लेकिन वह हार से इतने गुस्से में थे कि पहले ही स्टेडियम छोड़कर चले गए। अगले दिन हिटलर ने हॉकी के जादूगर ध्यानचंद से मिलने की इच्छा जताई। जैसे ही ध्यानचंद को यह संदेश मिला वह बेहद चिंतित हो गए। उन्होंने हिटलर की तानाशाही के कई किस्से सुने हुए थे कि कैसे वह छोटी–सी बात के लिए लोगों को गोली तक मार दिया करता है। इसके बाद तो ध्यानचंद की नींद ही उड़ गई थी। इस चिंता में वह न तो ठीक से खा पाए और न ही सो पाए। अगली सुबह जब ध्यानचंद हिटलर से मिलने पहुँचे तो जर्मन तानाशाह ने बेहद गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। बातचीत के दौरान हिटलर ने ध्यानचंद से पूछा कि वह भारत में क्या करते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि वह भारतीय सेना में सैनिक हैं। इस पर हिटलर ने उनके सामने न केवल जर्मन फौज में बड़े पद की पेशकश कर डाली, बल्कि उन्हें जर्मनी में बसने को भी कह दिया। लेकिन हमारे ध्यानचंद ने विनम्रतापूर्वक यह पेशकश ठुकरा दी और कहा कि वह अपने परिवार और भारत देश को नहीं छोड़ सकते। इसके साथ ही उनकी मुलाकात समाप्त हो गई। इस घटना के बाद बर्लिन ओलंपिक समारोह में भारतीय टीम ने हिटलर से दूरी ही बनाए रखी। ध्यानचंद खेलते समय सदैव अपने देश को याद रखते थे।

क्या सेकुलरवाद का झण्डा ऊँचा रखने वालों में अन्तर्जातीय व अन्तर्धार्मिक विवाह करने वाले स्वतः सबसे आगे रहते हैं?

सेकुलरवादियों की आज की अनोखी दुनिया

हरिकृष्ण निगम

मेरे विचार में जो लोग मुम्बई में पिछले ५-६ दशकों से लगातार रहते हैं उनको इस एक बात ने विशेष रूप से अवश्य आकृष्ट किया होगा कि यहाँ के जो लोग सेकुलरवाद का झण्डा ऊंचा रखने में सबसे आगे रहे हैं वे आस्थावान मुस्लिम धर्मानुयायी नहीं बल्कि उनकी दृष्टि में वे ही महत्त्वपूर्ण लोग रहे हैं जिन्हें वे **''धर्मच्युत'' व 'एपोस्टेट'** मानते हैं। यह भी कहा जाता है कि **''इस्लाम'' काफिरों''** या गैर-मुस्लिमों के साथ उनकी कुछ शर्तों पर सह-अस्तित्व स्वीकार करता है पर धर्मच्युत या 'एपोस्टेसी' के अपराधी को कभी माफ नहीं करता है और उन्हें वस्तुतः ईशनिन्दा के अपराध का दोषी मानकर दण्डित करना अपना दायित्व भी मानता है।

हमारे देश के वर्तमान राजनीतिक ढाँचे का यह वरदान है कि सेकुलरवाद हर प्रकार के अवसरवाद के लिए ऐसा कवच प्रदान करता है जिसे सार्वजनिक रूप से राजनीतिक औचित्य माना जाता है और उस पर अंगुली उठाने वाले पर साम्प्रदायिकता का लेबिल चिपका दिया जाता है। कम से कम मुम्बई में बैठकर यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि सेकुलरवाद एक नया धर्म है जो हिन्दू-विद्वेषियों में बहुधा अपने बेमेल अन्तरजातीय या सुविधा के अन्तरधार्मिक विवाहों द्वारा छिपाया भी जाता है। यह भी सच है कि कोई भी शासन व्यवस्था या राज्य तो सेकुलर हो सकता है पर व्यक्ति नहीं क्योंकि आज वह या तो हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी अथवा पारसी होगा अथवा नास्तिक या तार्किक। धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाला एक विकृत सेकुलरवादी ही होता है-न इधर का न उधर का, और कभी उच्च पदों पर आसीन होता है तो वह कह सकता है कि वह तो आधुनिक व प्रगतिशील है, हिन्दू आदि तो वह एकमात्र दुर्घटनावश है क्योंकि पारिवारिक आस्था चुनने में उसका कोई वश नहीं था।

मुम्बई में पुरानी चर्चित कहानियाँ कौन नहीं जानता? गौरी और शाहरुख खान, अजीत और फातिमा आगरकर, रेहाना और सुभाष घई, अमजद अली खान व सुब्बालक्ष्मी, नवाज मोदी और गौतम सिंहानिया। पूव मिस वर्ल्ड अदिति गोवित्रिकर और मुफ्फाजाई लकड़ावाला और निर्देशक सईद मिर्जा की मंगोलियाई ईसाई पत्नी जेनीफर की शादी की बात तो पुरानी पड़ चुकी है पर सत्तर के दशक के मुम्बई के शेरिफ और मेरीन ड्राइव पर राजनीतिक टिप्पणियों व सूक्तियों के हर रोज बदल कर बैनर लगवाने वाले नाना चूड़ासमा को आज भी शायद स्थानीय लोग नहीं भूले होंगे। उनका विवाह मुनीरा से लगभग ४० वर्ष पूर्व हुआ था। उनकी सबसे बड़ी लड़की वृन्दा ने अल्पफाज मिलर नामक मुस्लिम से शादी की थी जबकि छोटी लड़की शायत्रा ने हिन्दू मारवाड़ी लड़के मनीष से विवाह किया था। एक समय की प्रसिद्ध कैथोलिक मॉडल मलाइका अरोड़ा की अरबाज खान से शादी उतनी ही चर्चित थी जितनी आमिर खाँ की कई विदेशी श्वेत महिलाओं व हिन्दू शादियाँ। गजल गायक तलत अजीज की सिन्धी हिन्दू युवती बीना से शादी की चर्चा भी मनोरंजन की दुनिया में उतनी ही चर्चित थी जितनी प्रसिद्ध एम. टी.वी. चैनल के साइरस ब्रोचा की शादी आयेशा से हुई थी जो अपने को दो-तिहाई मुस्लिम और एक तिहाई हिन्दू मानती थी। इस बेमिसाल खिचड़ी के कंधे पर अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य आधुनिकता के अहंकार के बल पर उस युग में सेकुलरवाद को अभयारण्य मिलना शुरू हो चुका था। आज के हिन्दुओं के अनेक वैवाहिक युग्म में मुस्लिम या ईसाई पत्नियाँ अथवा हिन्दू पतियों के विद्रोही स्वरों के पीछे सेकुलरवाद की जो शरण साफ झलकती है वह उनके अस्तित्व व सामाजिक महत्त्व की असली रीढ़ की हड्डी है। एक अन्य उदाहरण जो ७५ वर्ष पूर्व के संभ्रान्त कलकत्ते का है उसको उद्धृत करने का लोभ संवरण करना कठिन है। भारत में बीमा उद्योग से जुड़े लगभग हर व्यक्ति ने ४० और ५० के दशक में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दन्तकथा बने एक अभिकर्ता शमशेर अली का नाम अवश्य सुना होगा। वे कनाडा की ''सनलाइफ'' और ''मैन्युफेक्चरर्स लाइफ'' जैसी विश्वविख्यात कम्पनियों द्वारा सम्मानित होने के साथ उन कुछ गिने-चुने भारतीयों थे जिनका नाम ''हॉल ऑफ फेम'' में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया गया था। सिर्फ अपने मनोबल व कठोर श्रम से उन्होंने उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों जितनी मासिक आय अर्जित करने की ठान ली थी और सन चालीस में ही आगे बढ़कर एक अभिकर्ता के रूप में रु. २०,००० प्रतिमाह कमीशन अर्जित करना प्रारम्भ कर दिया था। उनके सेकुलरवादी दृष्टिकोण का श्रेय उनकी अंग्रेज पत्नी नेली को दिया जाता है।

आज फिर देश के ताने-बाने में अन्तरधार्मिक सम्बन्धों को जिस तरह महिमामण्डित किया जा रहा है उसमें एक कटु यथार्थ और जुड़ गया है। यह खतरा है कि ईसाई भी अपने कुल नाम हिन्दू या जाति सूचक रखकर भ्रम में डालते हैं जैसे वे हिन्दू हों। यह लेखक स्वयं ३५ वर्षों तक देश के राष्ट्रीयकृत जीवन बीमा निगम में प्रथम वर्ग के अधिकारी के रूप में कार्यरत था पर उसे यह जानकर विस्मय हुआ कि हाल में इस सार्वजनिक उपक्रम के अध्यक्ष टी. विजयन थे जो आज बीमा नियंत्रक व प्राधिकरण के अध्यक्ष हैं और उन्हें इस बात पर अभिमान है कि वे एक आस्थावान सीरियाई ईसाई हैं। क्या आप जानते हैं कि सिकन्दराबाद की पूर्व विधायक श्रीमती जय सुधा या सेन्ट पीटर्स इंजीनियरिंग कॉलेज के ए.पी.टी. विजय पाल रेड्डी ईसाई हो सकते हैं। गत वर्ष २०१३ तक जोसेफ एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री महेन्द्र का कुलनाम भी उनके हिन्दू होने का भ्रम फैला सकता था। अवसर आने पर वे अपने को आधे हिन्दू, आधे ईसाई कहने लगते हैं। शिक्षा और चुनावों के समय में ईसाई चर्चों को यह लाभकारी लगता है। यह कैसा जातिविहीन, विषमताहीन वर्ग समाज है जो चर्च के प्रचारकों द्वारा समर्थन पाता है। सन २००४ के चुनावों में ए.पी. वाई. सैम्युल राजशेखर रेड्डी जो धर्मभीरू ईसाई हैं उन्होंने अपने जातिवाचक नाम से मतदाताओं का शोषण किया था। राजशेखर रेड्डी, वाई.एस.आर. कांग्रेस के ईसाई चर्चों को वर्षों तक तुष्टीकरण के प्रकरण राज्य के अनुदानों से इजरायल व मध्य एशिया में ईसाइयों को हजयात्रा की नकल पर यान की आर्थिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना एक सेकुलर कहलाने वाले देश के लिए लज्जा की बात रही है।

गत जुलाई २०१४ में उस प्रसिद्ध खिलाड़ी सानिया मिर्जा के लिए अंग्रेजी मीडिया में बेसिरपैर की बातें छपती रहीं जो राष्ट्र विरोधी कही जा सकती हैं। हम उस पर गर्व क्यों करें जबकि उसकी पृष्ठभूमि ही कलंकित रही है। वह महाराष्ट्र में पैदा हुई थी, हैदराबाद में बड़ी हुई और एक पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ी से शादी के बाद स्वेच्छा से पाकिस्तानी बहू बनी। हैदराबाद के ''ब्रैण्ड एम्बेसडर'' न बनाए जाने पर अंग्रेजी मीडिया ने उसके पक्ष में कई दिनों तक अभियान ही चला दिया था। क्या यह सत्य भुलाया जा सकता है कि यह शेष पृष्ठ 11 पर

बैन पर बीफ खाकर तथाकथित हिंदू-मुस्लिमों का शैतानी विरोध

केरल में उत्सव के नाम पर भारत की बहुसंख्यक जनमानस की भावनाओं से खुली रसोई में बीफ (गाय का मांस) पकाकर सरेआम खेला गया। इतना ही नहीं, मुस्लिमों द्वारा तथाकथित रूप से हिन्दुओं को साथ बैठाकर बीफ खिलाने के षड्यंत्र के भी समाचार मिले हैं। इस फेस्टिवल को लोग महाराष्ट्र में बीफ पर लगाए गए बैन के विरोध में मनाया गया। उल्लेखनीय है कि केरल में गाय और भैंस दोनों के मांस को बीफ कहा जाता है। केरल में बीफ खाना कोई धर्म से जुड़ा मामला भी नहीं माना जाता है। बताया जाता है कि केरल में बहुत से हिंदू ऐसे हैं जो न सिर्फ बीफ खाते हैं बल्कि यह लोगों का पसंदीदा मीट भी माना जाता है। इस दानवी उत्सव में प्रोटेस्ट करने आए केरल सीपीएम यूथ विंग के अजीत पी. ने कहा, कि मैं एक हिंदू हूँ परन्तु मैं भी बीफ खाता हूँ और मुझे अपनी पसंद की चीजें खाने की आजादी मिलनी चाहिए। इस दौरान अजीत को अपनी डिश मुहम्मद के साथ शेयर करते भी देखा गया। मुहम्मद ने कहा कि हम दोनों को ही बीफ खाने से कोई समस्या नहीं है। यह केरल का कल्चर है और हम अगर कुछ खाना चाहते हैं तो कोई हमें कैसे रोक सकता है?

गोमांस भक्षी हिन्दू नहीं हो सकता!

देश, काल, परिस्थितिजन्य कारणों से मानव जाति मांस भक्षण करने लगी थी। यह वर्तमान पंथ, संप्रदाय एवं धर्म आदि बंटवारे से पूर्व की स्थिति है। इसी कारण सभी धर्मों में मांस भक्षण कम-ज्यादा विद्यमान है। परन्तु स्पष्ट शब्दों में कह, सुन एवं समझ लेना चाहिए कि गोमांस भक्षण करने वाला कभी भी हिन्दू या सनातनी नहीं हो सकता।

साधक गोबरानन्द

जम्मू कश्मीर में नगर विस्तार पर बवाल

✍ डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री

जम्मू कश्मीर में मीडिया ने एक शोशा छोड़ा है। कर्मचारी हिन्दू सिक्खों के लिए सरकार एक नया शहर बसाने जा रही है, जिसमें केवल वही हिन्दू सिक्ख रहेंगे, जिनको आतंकवादियों ने वहाँ से निकाल दिया था। लेकिन इससे पहले एक और टिप्पणी करना जरूरी है। क्योंकि इन टिप्पणियों की रोशनी में कश्मीर में उठा यह विवाद आसानी से समझा जा सकता है। यमन, जहाँ एक प्रकार से नरसंहार चल रहा है और वहाँ शिया समाज के लोगों को मुसलमान बेरहमी से मार रहे हैं, से हजारों भारतीयों को सफलतापूर्वक निकाला गया है। लेकिन मीडिया के रवैये से दुखी होकर पूर्व सेनाध्यक्ष वी.के. सिंह, जो आजकल राज्य मंत्री हैं, ने अंग्रेजी शब्द प्रास्टीट्यूट के हिस्से में एक शब्द का हेरफेर कर दिया, जिससे मीडिया के कुछ मालिकों को लगने लगा कि परोक्ष रूप से उनकी तुलना वेश्या से की गई है। किसी ने कहा भी है—एक नुक्ते के हेर फेर से खुदा जुदा हो गया। जब मैंने वी.के. सिंह द्वारा किये गये नुक्ते के इस हेर फेर को पढ़ा, तो मुझे भी लगा था कि उन्हें यह नहीं करना चाहिये था। लेकिन अब जम्मू कश्मीर में नगरीकरण के मुद्दे पर मीडिया द्वारा मचाए गये इस विवाद को देखा तो मुझे लगा कि वी.के. सिंह ही ठीक थे, मेरी धारणा गलत थी।

भारत में पिछले आठ दशकों से तेजी से नगर विस्तार हो रहा है। नये नगर बसाए और बनाए जा रहे हैं। चंडीगढ़ और गांधी नगर इसके नजदीक के उदाहरण हैं। पुराने नगरों का विस्तार हुआ है। उदाहरण के लिए, दिल्ली से नई दिल्ली, मुम्बई से नवी मुम्बई, पंजाब में नंगल से नया नंगल इत्यादि। इस सूची में सैकड़ों नाम जोड़े जा सकते हैं। जम्मू कश्मीर में ही जम्मू शहर का इतना विस्तार हुआ है कि पुराने जम्मू के मुकाबले, नये विस्तार को नया जम्मू की संज्ञा भी दी जा सकती है। इसी प्रकार की एक योजना जम्मू कश्मीर सरकार ने राज्य में नये नगर बनाने की प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री ने यह भी कह दिया कि नये नगर में, आवंटन के समय कश्मीर में से निकाले गये लोगों को प्राथमिकता दी जायेगी। हिन्दुओं के लिए ही एक अलग नगर बसाया जा रहा है, इस प्रकार के संकेत उनके बयान से कहीं भी नहीं मिलते थे। लेकिन मुख्यमंत्री की भाषा के, मीडिया मालिकों ने वही अर्थ निकाले, जो उनके अपने व्यवसाय और मकसद के अनुकूल पड़ते थे। (यह भी हो सकता है कि मुख्यमंत्री खुद भी अपने राजनैतिक समीकरणों को ध्यान में रखते हुये, चाहते हों कि उनके बयान के वहीं अर्थ निकाले जायें जो मीडिया ने निकाले हैं) तुरन्त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से रेड अलर्ट जारी कर दिया कि भारत सरकार, जम्मू कश्मीर की सहायता से वहाँ केवल हिन्दुओं के लिए एक नया शहर बसाने जा रही है। इस अवसर पर, यदि मीडिया को संशय का लाभ देना हो, तो कहा जा सकता है कि

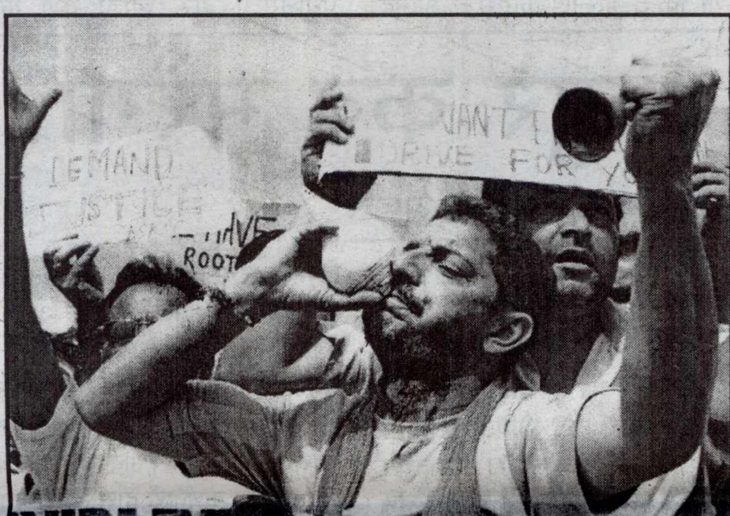

जब मुख्यमंत्री खुद ही इन्हीं अर्थों के निकाले जाने में रूचि रखते हों तो मीडिया का क्या दोष है? तब भी मीडिया बरी नहीं हो सकता। तब तो मामला और भी संगीन हो जाता है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि मीडिया मुख्यमंत्री के बिछाये जाल में फँस गया और परोक्ष रूप से उन्हीं की सहायता करने लगा या तो जाल में फँस गया या फिर उसकी योजना का हिस्सा बन गया। खैर, इस रेड अलर्ट के बाद अपने—अपने अखाड़ों में इसके पक्ष विपक्ष में बहस चला दी गयी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में चलाई जा रही बहस में एक पेंच रहता है। बहस के लिये किनको आमंत्रित करना है, इसका निर्णय और कोई नहीं बल्कि मालिक स्वयं ही करता है। इसका अर्थ है बहस को किस दिशा में चलाना है और दर्शकों तक उसका क्या निष्कर्ष पहुँचना चाहिये, इसका निर्णय मोटे तौर पर कार्यक्रम में भाग लेने वालों का चयन करते समय ही हो जाता है।

यही सब कुछ कश्मीर घाटी में नया श्रीनगर या कुछ नये नगर बनाने के मामले को लेकर हुआ। जम्मू कश्मीर में समय की माँग को देखते हुए नये नगर बनाये जा सकते हैं, इससे किसी को क्या विरोध हो सकता है? नये नगरों के आवंटन को लेकर प्राथमिकता उन लोगों को दी जानी चाहिये जो आतंकवाद के कारण राज्य से भगा दिये गये, इससे भी किसी को विरोध का कोई कारण दिखाई नहीं देता। कश्मीरी हिन्दू सिक्खों को वापिस राज्य में लाने के प्रयास करने चाहिये, इससे भी लगभग सभी सहमत हैं। यहाँ तक कि आतंकवादियों का प्रत्यक्ष परोक्ष प्रतिनिधित्व करने वाले अलगाववादी भी इसका समर्थन करने को विवश हैं। जब आप अस्थाई तौर पर कोई कॉलोनी बसाते हो तब तो आप किसी ख़ास वर्ग, समुदाय या व्यवसाय के लोगों को एक साथ वहाँ बसा सकते हो लेकिन जब आप एक पूरा शहर बसाते हो तो आप उस शहर में किसी भी एक वर्ग के लोगों को कैसे बसा सकते हो? आखिर आवंटन के कोई नियम बनेंगे। अलबत्ता सरकार चाहे तो किसी वर्ग को प्राथमिकता जरूर दे सकती है। इस मामले में भी सरकार ने कश्मीरी हिन्दू विस्थापितों को प्राथमिकता देनेकी ही बात कही थी। लेकिन जब मीडिया ने उसमें नुक्ते का हेरफेर करके घाटी में रेड अलर्ट जारी कर दिया तो सरकार ने पूरी स्थिति पर अपना स्पष्टीकरण दे दिया ताकि मामला ठीक से समझ में आ जाये तो उसी मीडिया ने छाती पीटनी शुरु कर दी कि सरकार अपने स्टैंड से पलट गई है। तिल का ताड़ बनाने की यही कला है, जिसको लेकर कई किस्से—कहानियाँ प्रचलित हैं।

अब इस विषय को लेकर दो तीन दिन तक बुद्धु बक्से पर चलती रही बहस को लेकर जब इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के मालिकों को लगा कि उन्होंने अच्छी तरह लोगों के मन में बिठा दिया है कि सरकार हिन्दुओं के लिये कश्मीर घाटी में अलहदा नगर बना रही है और अब इस पक्ष विपक्ष में बहस चलाई जा सकती है तो बुद्धु बक्से के मालिक इस मौके पर तुरन्त किसी यासीन मलिक को पकड़ कर ले आये। भाव भंगिमाएँ कुछ इस प्रकार की बनाई गई मानो पूरे जम्मू कश्मीर राज्य का कोई प्रतिनिधित्व करता है तो यही यासीन मलिक है। अब जब वह बुद्धु बक्से में कुछ बोल देगा तो मीडिया इसे जम्मू कश्मीर के अवाम की आवाज बता कर दुनिया भर में ले उड़ेगा। अब यासीन मलिक बता रहे हैं कि हम किसी भी हालत में कश्मीर घाटी में हिन्दुओं के लिये अलग नगर नहीं बनाने देंगे। उनका कहना है कि वे घाटी को इजरायल नहीं बनने देंगे। एक दूसरे सज्जन बता रहे हैं कि वे घाटी में फिलस्तीन नहीं बनने देंगे। यासीन मलिक यह भी विस्तार से बता रहे हैं कि कश्मीरी हिन्दुओं को घाटी में आकर कहाँ रहना चाहिये। मसलन उनका कहना है कि वे अपने—अपने गाँवों में ही वापिस जाकर रहना शुरू करें। कश्मीर के हिन्दुओं को कहाँ रहना है और कहाँ नहीं रहना है, इसका निर्णय करने का अधिकार तो आखिर उन्हीं के पास रहना चाहिये या इसका फैसला भी यासीन मलिक या उनकी बिरादरी के लोग ही करेंगे?

लेकिन इससे भी अहम प्रश्न एक और है जो इसी से जुड़ा है? वह प्रश्न है कि आखिर यह यासीन मलिक कौन है? मैं इसके पोस्टल एड्रेस और वलदीयत की बात नहीं कर रहा। मेरा अभिप्राय है कि क्या वह सचमुच कश्मीर घाटी के किसी भी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता भी है या नहीं? यदि करता है तब तो ठीक है, लेकिन यदि नहीं करता तो मीडिया उसे अपनी ओर से ही घाटी का प्रतिनिधि बनाने का प्रयास क्यों कर रहा है? यासीन कश्मीर घाटी के गुज्जरों का प्रतिनिधि नहीं है। वह वहाँ के शिया समाज का भी प्रतिनिधि नहीं है। वह वहाँ के सैयदों और मुसलमानों का भी प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता। *पठान उसे अपना प्रतिनिधि मानते* हों इसका कोई प्रमाण उसने अभी तक नहीं दिया। कश्मीर घाटी के हिन्दू और सिक्ख उसे अपना प्रतिनिधि मानते हों, ऐसा दावा करने का साहस शायद वह खुद भी जुटा न पाये। कश्मीर के जो लोग जियारतखानों में भीड़ लगाये रखते हैं, वे तो खुद ही यासीन मलिक को अपना नुमांयदा स्वीकार नहीं करते क्योंकि कश्मीर को भी अरबस्तान बनाने का सपना देखने वाले लोग सबसे ज्यादा विरोध इन जियारतखानों का ही करते हैं और उन्हें इस्लाम विरोधी बताते हैं। फिर आखिर यासीन मलिक किसकी और से बोल रहा है? यही प्रश्न अनुपम खेर ने पूछा था कि क्या यासीन मलिक राष्ट्रपति है, मुख्यमंत्री है, सांसद है या विधायक है? आखिर बुद्धु बक्सा क्या सोच कर यासीन मलिक को कश्मीर घाटी की आवाज बताकर पूरे देश को गुमराह कर रहा है? यदि यासीन मलिक के साथ केवल कश्मीर घाटी की ही जनता होती, कश्मीर घाटी में शहरों की हालत को सुधारने के लिये आधुनिक ढंग से नगरीकरण विस्तार की इस योजना का विरोध करने के लिये, मलिक की पार्टी समेत हुर्रियत ने सड़कों पर विरोध का जो नारा दिया था, उसे जन समर्थन न मिलता? यह विरोध प्रदर्शन तो टांय—टांय फुस्स हो गया। लेकिन ताज्जुब है तब मीडिया मालिकों ने इस पर बहस करवाना जरूरी नहीं समझा।

राजनीतिक मास्टरस्ट्रोक है यूएई दौरा

मिथिलेश सिंह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह विशेष अदा है कि वह पूरी चर्चा को ही किसी और दिशा में अचानक मोड़ देते हैं और यह मोड़ कोई आधा अधूरा होने की बजाय इतना सुस्पष्ट और साफ होता है कि लोगों को पिछला मुद्दा याद ही नहीं रहता है और आगे की बातें होने लगती हैं, ठीक उस गाने की तरह जिसमें कवि कहता है– "छोडो कल की बातें "। राजनैतिक गलियारों में अभी पंद्रह अगस्त की खुमारी भी नहीं उतरी थी कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने यूएई दौरे से विश्लेषकों को भी भौंचक्का कर दिया है। कहाँ तो यह चर्चा चल रही थी कि प्रधानमंत्री का इस बार लाल किले से दिया गया भाषण, पिछले भाषण की तुलना में कम दमदार था अथवा प्रधानमंत्री वन रैंक, वन पेंशन पर झेंप रहे थे अथवा प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार पर व्यापम या ललित गेट पर कुछ नहीं बोला आदि, आदि और अचानक चर्चा मुड़ गयी और राजनीतिक विश्लेषक यह आंकलन करने लगे कि प्रधानमंत्री यूएई की मस्जिद में क्यों गए, इसके निहितार्थ क्या हैं आदि, आदि! खैर, प्रधानमंत्री का यह दौरा किसी भी किन्तु–परन्तु से काफी आगे की अहमियत रखता है। यूं तो प्रधानमंत्री अपने प्रत्येक विदेशी दौरे से बेहतर हासिल करने की कोशिश करते हैं, लेकिन यूएई का दौरा न केवल निवेश के लिहाज से बल्कि प्रधानमंत्री की राजनैतिक छवि के लिए भी 'सोने पर सुहागा' साबित होने जा रहा है। इसकी विस्तार से चर्चा आगे की पंक्तियों में करेंगे, पहले उनके दौरे पर संक्षिप्त नजर डाल लेते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्रधानमंत्री किसी देश की विजिट से ठीक पहले वहां की भाषा में ट्वीट करके एक भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करते हैं तो उन्होंने यूएई जाने से पहले भी अरबी भाषा में ट्वीट करके इस परंपरा को बनाये रखा। इसके बाद प्रिंस और उनके भाइयों की आगवानी में प्रधानमंत्री ने भारत में निवेश की ठोस संभावनाओं से वहां के उद्योगपतियों का आकर्षक तरीके से ध्यान खींचा। बताना लाजमी होगा कि अमेरिका और चीन के बाद भारत का सबसे बघ व्यापारिक साझीदार यूएई ही है। प्रधानमंत्री ने इसका जिक्र करते हुए याद भी दिलाया कि ७०० विमानों की आवाजाही दोनों देशों के आपसी जुड़ाव की ओर स्वतः ही इशारा करती है। प्रधानमंत्री की इसी टिप्पणी के एक हिस्से, जिसमें उन्होंने भारतीय

प्रधानमंत्रियों के ३४ साल तक इस देश का दौरा न करने का प्रसंग छेड़ा था, कांग्रेस ने मुद्दा बना लिया। हालाँकि, इस बात को सामान्य तरीके से ही लिया जाना चाहिए था, किन्तु झल्लाई कांग्रेस के आनंद शर्मा ने नरेंद्र मोदी की मानसिकता को 'अस्थिर' बताने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। वैसे, जिस प्रकार पिछले मानसून–सत्र को कांग्रेस की बेवजह जिद के कारण बर्बाद होना पड़ा, उसने इस पुरानी पार्टी की छवि जनता के बीच और भी खराब कर दी है। नतीजा यही हो रहा है 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे'! खैर, कांग्रेस की इस आलोचना से बहुत आगे जाकर अपना असर छोड़ने में कामयाब रहा है प्रधानमंत्री द्वारा खाड़ी देश की यह यात्रा। इस बात में कोई शक नहीं है कि खाड़ी देशों के पास अपार सम्पदा है और इस सम्पदा के कारण विज्ञान की प्रगति के प्रथम द्वार बनने की ओर अग्रसर हैं यूएई जैसे देश। प्रधानमंत्री ने इस तरफ इशारा करते हुए विजिटर्स बुक में 'साइंस ऑफ लाइफ दर्ज किया और भारत में टाउनशिप की मजबूत संभावनाओं की ओर वहां के उद्योगपतियों का ध्यान खींचते हुए यह बताना नहीं भूले कि भारत सिर्फ एक बाजार ही नहीं है, बल्कि बेहद मजबूत देश है जहाँ निवेश की अपार सम्भावना है। प्रधानमंत्री की इस बात में उन व्यक्तियों और देशों के लिए चेतावनी की गंध महसूस की जा सकती है कि जो कोई भी भारत को मात्र बाजार समझने की भूल करेगा, भारत उसे कतई इंटरटेन नहीं करेगा. इसी कड़ी में प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी जानते हैं कि यूएई में टाउनशिप और ऊँची बिल्डिंग्स बनाने के शेष पृष्ठ 11 पर

दहेज का असुर कब मरेगा?

डॉ. अमरजीत मौर्य 'पुष्कर'

भारतवर्ष में दहेज एक ऐसा असुर है, जिसकी क्रूरता में अगणित कन्याएँ अपना प्राण त्याग चुकी, अनेक वैधव्य का दुःख भोग रही हैं, अनेक परित्यक्त बनकर त्रास पा रही हैं। कन्याओं के माता–पिता का तो यह असुर रक्तपान करके किसी योग्य ही नहीं रहने देता/ जिस साधारण आर्थिक स्थिति के व्यक्ति को कन्या का पिता बनने का दुर्भाग्य प्राप्त हो चुका है, वह भुक्तभोगी भली प्रकार जानता है कि किसी खाते–पीते घर का पढ़ा–लिखा लड़का ढूँढकर विवाह करने में उसे कितनी दीनता, कितनी जलालत, कितनी गले न उतरने वाली कठोर शर्तें स्वीकार करने को विवश होना पड़ता है, इस कठिनाई ने कन्या और पुत्र के समान दरजे की स्थिति ही बदल दी है, अब तो पुत्र का जन्म सौभाग्य का और कन्या का जन्म दुर्भाग्य का चिन्ह माना जाता है। पुत्र जन्म पर बाजे बजते हैं तो कन्या के जन्मते ही घर–घर में उदासी छा जाती है।

बालक–बालिकाओं के बीच माता–पिता की दृष्टि में भी ऐसे अन्तर उत्पन्न करने का हेतु प्रधानतया यह 'दहेज' का असुर ही है, जिसकी कल्पना जन्म के दिन ही कर ली जाती है और एक के साथ कुछ पाने की और दूसरे के साथ कुछ गंवाने की दृष्टि उत्पन्न होने से स्नेह भाव में अंतर आ जाता है। हर किसी को कन्या के अभिभावकों के रूप में दहेज की निन्दा करते देखा

और सुना जा सकता है किन्तु वही व्यक्ति जब पुत्र का पिता या वर पक्ष की स्थिति में आता है और दहेज को अपना अधिकार एवं प्रतिष्ठा का माध्यम और धन कमाने का एक स्वर्ण सुयोग्य मानकर उस अवसर से भरपूर लाभ उठाना चाहता है। मनुष्य का यह दोगला रूप देखकर आश्चर्य होता है कि थोड़ी सी देर में ही वह अपने अनुभव को भूल जाता है। यदि वर पक्ष के रूप में वह दहेज का समर्थक था तो अब कन्या पक्ष का बनने की स्थिति में अपना घर कुर्क कराने में क्यों झिझकता है वह दुरंगी चाल दहेज के असुर को जीवित रखने में सहायक होती है। और वचन तथा कार्य में भिन्नता बरतने वाले समाज–सुधारकों के लेक्चर तथा लेखों को एक कुतूहल मात्र समझे जाने की स्थिति. से आगे नहीं बढ़ने देती। हमें अपने विचार और कार्यों में एकता लानी होगी। यदि दहेज बुरा है तो लड़के के पिता के रूप में उसे समझने को तैयार रहना होगा। यदि दहेज अच्छा है तो कन्या के पिता के रूप में भी उसे बिना शिकायत और रंज माने देना होगा। दोहरी चालें चलना हमारे नैतिक अधः पतन का चिन्ह है। पतित व्यक्ति चाहे वे ध्नी, विद्वान, चौधरी, पंच कोई भी हो, कोई प्रभावशाली प्रेरणा देकर समाज का पथ–प्रदर्शन करने की क्षमता नहीं रखते। दहेज का विरोध जहाँ–तहाँ सुनाई पड़ता है, पर उसके पीछे कोई बात नहीं होती, क्योंकि वे विरोध करने वाले व्यक्ति ही कथनी और करनी में अंतर रखकर अपनी स्थिति उपहासस्पद बना लेते हैं। उनकी आवाज के पीछे कोई बल न होने के कारण वह सुधार आन्दोलन नपुंसक ही रहता है। अब चौधरी, पंच और जातीय कर्णधारों द्वारा आयोजित सभा–सम्मेलनों के प्रस्तावों पर निर्भर न रहकर कुछ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, अन्यथा इस गिरती हुई आर्थिक स्थिति में जमाने में एक ऐसा सामाजिक संकट उत्पन्न हो जायेगा, जिससे 'जीवित रहते हुए आत्महत्या' करने जैसे कष्ट से कम त्रासदायक अनुभव न किया जायेगा।

इस दिशा में लड़के और लड़कियाँ पहल कर सकते हैं। ४०–५० वर्ष से ऊपर की आयु के माता–पिता प्रायः अपना साहस खो बैठते हैं। लड़के के पिता लाभ नहीं छोड़ना चाहता और लड़कों का पिता यह नहीं सोचता कि किसी सुयोग्य को चाहे वह अति सम्पन्न हो, उस घर में कन्या दे दूँ अथवा जब तक सुयोग्य लड़का न मिले तब तक सयानी कन्या को अनिश्चित काल के लिए अविवाहित रहने दूँ। इन वयोवृद्धों को लाठी की तरह सहारा देकर लड़के और लड़कियाँ उन्हें रास्ता बता सकते हैं।

भावनाशील लड़कों को प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि अपनी अपेक्षा निर्धन घर की कन्या से बिना दहेज के शादी करूँगा। अभिभावकों से उन आदर्शवादी युवकों को स्पष्ट शब्दों में कहना पड़ेगा कि प्रत्यक्ष ही नहीं अप्रत्यक्ष दहेज की बात भी चलाई जायेगी, तो उस विवाह को करने के लिए कदापि तैयार नहीं होंगे।

इसी प्रकार मनस्वी, कन्याएँ अपना साहस बटोर कर अपने घरवालों को बता दें कि वे दहेज माँगने वाले सामाजिक कोढ़ी अमीरों के यहाँ जाने की अपेक्षा निर्धन और कमजोर स्थिति के घरों में जाने के लिए तैयार हैं पर दहेज के साथ सम्पन्न घरों में तथाकथित 'सुशिक्षित' लड़कों के साथ विवाह करना पसंद न करेगी। अनुकूल स्थिति न आने पर कन्याएँ आजीवन कुमारी रहने का व्रत भी ले सकती हैं और अपने त्याग से एक दूषित वातावरण को तोड़ने का आदर्श उपस्थित कर सकती हैं। माता–पिता को आर्थिक संकट में डालने से बचाने के लिए कई कन्याएँ आत्महत्याएँ कर चुकी हैं पर उससे अच्छा मार्ग आत्मत्याग का है। कन्याओं के ऐसे आत्मत्याग भी दहेज शेष पृष्ठ 10 पर

BALANCED ARGUMENTS

✍ Priyang Pandey

Imagine a pizza – with different toppings that you have especially ordered. Along comes the delivery boy, and tells you that depending on how much you pay, you get to pick the slice with the toppings you want. No, you can't have the whole pizza though earlier you got it for a price. Now each slice is priced differently.

As India wakes up to net neutrality, it's hard to imagine that the Internet is being priced like the pizza. And soon it could become a reality if some of the telecom companies in the country have their way.

India is the second largest user base of Internet services after China, with over 60,000 users getting added every day with one or the other social media platform. The reach of Internet can be gauged from the fact that in the 2014 Lok Sabha elections, all the parties and especially BJP fought many of its campaigns on the social media platform. So much so that many political pandits attributed the Modi wave to the party's massive campaign on the social media. In this context the debate on net neutrality has acquired centre stage for netizens.

Why the battle over Net Neutrality?

Earlier this year, a debate started on net neutrality. Two giant telecom companies decided it was unfair to them that some websites and applications were using their infrastructure, and in some cases, offering the same services as these telecom companies for free while using the telecom company's infrastructure.

So off they went to the Telecom Regulatory Authority of India (TRAI), alleging business losses and the need for the Internet to be regulated like telecom companies. In a letter, the telecom companies argued that they were suffering due to these over-the-top service providers like WhatsApp and Skype. Over-the-Top (OTT) refers to video, television and other services provided over the Internet rather than via a service provider's own dedicated, managed IPTV network.

In response, on March 27, 2015, telecom regulator TRAI floated a consultation paper of 117-odd pages on Regulatory Framework for OTT services/Internet services and Net Neutrality. The twenty questions TRAI asked the public in the consultation paper pertained to whether the hitherto unregulated over-the-top services, typically apps such as Skype and Facebook that ride on telecom networks, need regulation.

Views have also been sought regarding net neutrality, the principle of data equality that has over the years ensured the Internet remained a level playing ground.

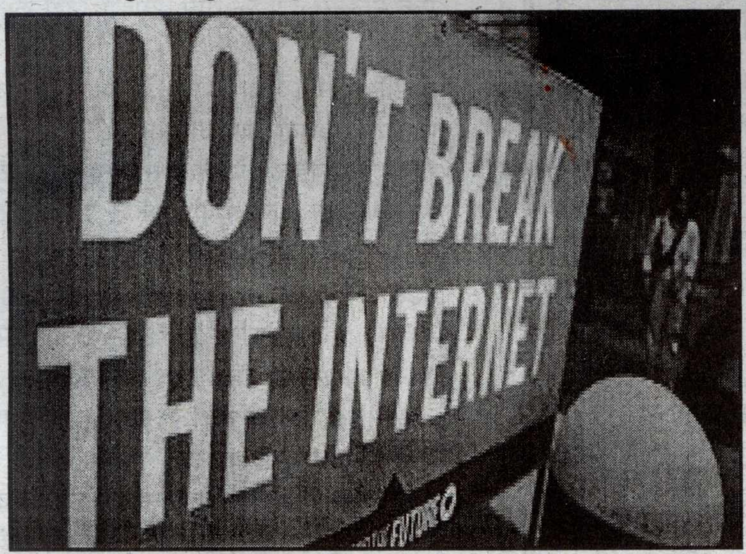

The issue seemed to have touched nerves though. In less than a week's time, more than 9 lakh emails were sent to TRAI to save the "free" Internet. Worried netizens came up with websites like savetheinternet.in and netneutrality.in, a video by All India Bakchod, a start-up firm, went viral talking about net neutrality. It was much like the USA, where a British comedian John Oliver started a show on net neutrality and started a debate on net neutrality and flooded the The Federal Communications Commission (US regulator) with emails from users demanding a neutral Internet.

Why do ISPs want to carve up the Internet?

The argument put forth by Airtel and Facebook is that they will offer free use of those websites and applications listed with their platform, like the toll free number in case of voice telephony.

As per the email sent to users by Airtel, the company clarifies, "Airtel Zero is a technology platform that connects application providers to their customers for free. The platform allows any content or application provider to enroll on it so that their customers can visit these sites for free. Instead of charging customers we charge the providers who choose to get on to the platform."

It then says, "Our platform is a technology platform and is open to all application developers and their customers. Our platform only provides a choice of how the data that is consumed is paid for by any of the two – the application provider or their customer."

How does it affect users?

At present, as an Internet user, you pay for the plan which consists of a set amount of allotted data that can be utilised within the given period of time. This can be used to access any Internet based services which is lawful, be it a Skype video call to relatives abroad, messaging on WhatsApp 24*7 or watching a video on YouTube.

However, if the Airtel Zero or Internet.org format is allowed by TRAI, users will have to pay separately for different apps and web based services. For instance, if Facebook is on one platform and Skype is on the other, then the user will end up paying separately for getting on to both platforms to enjoy uninterrupted services of Facebook as well as Skype, which clearly violates the principle of net neutrality.

It is important to ensure internet remains a level playing ground in India; equally important is to see internal security concerns are aptly addressed.

More importantly, it takes away the choice to opt for any service or application you want. It also rings the death knell for start-ups and other small companies. India though is still at a nascent stage in its Internet avatar, nearly 85per cent of the population is still waiting to get connected to the Internet. People have however realised the commercial potential of its reach, with many Internet based start-ups hoping to be the next Google, Facebook or Amazon of India.

A few questions

The sentiments are noble no doubt. And it's wonderful to take a pledge. But who's holding Airtel accountable to the pledge? In 2012, Google-backed Measurement Lab (M-Lab) reported that Airtel and other ISPs had been throttling BitTorrent traffic in India for years. That is just an example of how differentiation can happen.

As the Savetheinternet.in page points out, it shifts the model of the Internet from a situation where a consumer pays Airtel to access whatever he wants, with the whole Internet being accessible, to where a company pays to allow its app or service to be accessible to Zero users, and access to the rest being limited.

In effect, these platforms change the way the Internet works by reducing consumer choice by fencing them in, making Internet companies' dependent on telecom operators for discovery and access of their services.

Beyond Net Neutrality

There is a side beyond net neutrality. Even as the Internet provides a level playing field to start-ups and other such businesses, security remains an issue. There have been many instances of cyber crime and frauds in India in the recent past after the technology became prevalent in all spectrums. From application forms of competitive exams to mobile phone recharge, we are dependent on the Internet mostly. Last but not the least, is inability to trace and intercept the terrorist and criminal activities carried out using these OTTs.

Consumer forums are flooded with complaints against Internet frauds due to many websites and web based applications are running on the network without any regulations.

Conversely, there are many websites and applications asking for your personal details as well as your credit/debit card details for financial transactions. A few months ago RBI issued a guideline to all service operators and consumers to be cautious about financial transactions made online.

coitnued on page no. 11

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

राधे माँ को बदनाम करने के पीछे असली मकसद हिंदुत्व को बदनाम करना है, साजिश में ईसाई और आईएसआई : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके कहा कि राधे माँ को बदनाम करने के पीछे का असल मंतव्य हिंदुत्व विचारधारा के ऊपर कीचड़ उछालना है। गौरतलब है कि पिछले कुछ दिनों से हिन्दू संतों के ऊपर अनाप–शनाप आरोप लगाये जा रहे हैं, जिसकी अगली शिकार राधे माँ हुई हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने स्पष्ट कहा कि हिंदुत्व के ऊपर किसी भी प्रकार हमले को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा और इसका करारा जवाब दिया जायेगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने आगे कहा कि इस्लाम, जिसके ६० फीसदी लोग आतंकी सोच के होते हैं और दुनिया भर में आतंकवाद इन्हीं के कारण है, उनके आतंकी डीएनए के बारे में कोई कुछ नहीं बोलता है, जबकि हिंदुत्व पर हमला करना मीडिया और मिशनरियों का पेश बन गया है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने इस बारे में स्पष्ट कहा कि यदि राधे माँ दोषी हैं तो उन पर कानून अपना काम करेगा, बल्कि वह खुद अपने ऊपर सीबीआई जांच की मांग कर चुकी हैं, ऐसे में उनका नाम लेकर हिंदुत्व को बदनाम करना आईएसआई और ईसाई मिशनरियों की बड़ी साजिश का हिस्सा ही दीखता है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने देश के प्रधानमंत्री और गृह मंत्री से हिंदुत्व को बदनाम करने वाले मामलों पर सख्त संज्ञान लेने को कहा है, जिससे कोई भी मुंह उठाकर हिन्दुओं को बदनाम करने से बाज आये। अखिल भारत हिन्दू महासभा हिंदुत्व को बदनाम करने के षडयंत्रों का गंभीरता से प्रतिरोध करेगी।

जंतर मंतर पर हिन्दुओं का मुसलमान बनना बड़ी साजिश, हिन्दू महासभा ने हरियाणा सरकार से जवाब माँगा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके हरियाणा सरकार से इस बात का जवाब माँगा है कि आखिर किस प्रकार उसके राज्य में हिन्दू इस प्रकार मजबूर हुए कि उन्हें अपना धर्म परिवर्तन करना पड़ा। गौरतलब है कि हरियाणा से कुछ दलित परिवारों ने आरोप लगाया था कि उन्हें गाँव के दबंगों द्वारा लगातार परेशान किया जा रहा है, मगर उनके ऊपर कोई सुनवाई नहीं हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने स्पष्ट कहा कि उन लोगों की जो भी समस्याएं थीं, उसे न सुलझाने के लिए राज्य सरकार को जवाबदेही लेनी चाहिए। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने कहा कि जंतर मंतर पर हिन्दुओं का मुसलमान बनना बड़ी साजिश का हिस्सा लगता है, इस बात की उच्च स्तरीय जांच की जानी चाहिए कि इन लोगों को मोहरा बनाने के पीछे कहीं कोई और खेल तो नहीं खेला जा रहा है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने इन सभी लोगों की घर वापसी के लिए अभियान तेज करने का आह्वान किया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के पदाधिकारियों ने केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को साफ बता दिया है कि यदि धर्मान्तरण का सिलसिला यूँ ही चलता रहा तो हिन्दू महासभा संसद से सड़क तक आंदोलन करेगी।

शेष पृष्ठ 8 का **दहेज का असुर.....**

के लोभी रक्त पिपासुओं की आँखें खोलने में कुछ कारगर सिद्ध हो सकते हैं। अर्थलोलुप वरपक्ष लोगों को दहेज जैसे कुरीति की जड़ माना जाता है। बहुत अंशों में यह ठीक भी है, पर कन्या पक्ष वालों को भी इस सम्बन्ध में सर्वथा निर्दोष नहीं माना जाना चाहिए। वे आर्थिक सम्पन्नता की दृष्टि से लड़के ढूँढ़ते हैं। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है उन्हीं पर सैकड़ों लड़की वाले टूटते हैं, फलस्वरूप उन लड़के वालों को नीलाम की बोली पर चढ़ा देते हैं। यदि लड़की वाले अपेक्षाकृत निर्धन घर के और 'सुशिक्षित' लड़के ढूँढ़कर सामान्य स्थिति के सम्बन्ध से काम चलाते हैं तो अधिक अमीर और खूबसूरत लड़कों पर जो भीड़ टूटती है वह न टूटे और दहेज का प्रश्न बहुत अंशों तक हल हो जाये। दहेज न देने के साथ–साथ लड़की वालों को इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए कि ऊँची कीमत वाले जेवर–कपड़े की न तो माँग की जाये और न उनका प्रदर्शन कराया जाये। अच्छा तो यह है कि कन्या का पिता ही जो कुछ जेवर, कपड़ा स्वेच्छापूर्वक दे सकता है, वह देकर कन्या को विदा कर दे। विवाहोत्सव की भारी खर्चीली रिवाजें बन्द करके कम से कम व्यक्तियों की उपस्थिति में यह एक साधारण पारिवारिक आयोजन मात्र बना लिया जाए। दहेज का जितना धन इन प्रदर्शनों और आडम्बर बाँधने की विडम्बना में खर्च हो जाता है, इसे बन्द करना भी दहेज बन्द करने के समान आवश्यक है। अब स्थिति ऐसी आ गई है कि हमारे बच्चों के प्राण संकट में डालने वाले दहेज रूपी असुर का विनाश करने को, किन्हीं ठोस आधारों पर कदम उठाया जाना चाहिए। यद्यपि व्यापक अर्थ लोलुपता से उत्पन्न अनेक अनैतिकताओं की भाँति यह भी एक सामाजिक अनैतिकता है, जिसके लिए केवल वर के पिता को ही दोषी मान लेना और केवल उसी के सुधरने से सब कुछ ठीक हो जाने की आशा नहीं की जा सकती। कन्या वाले भी अमीर घर इसलिए ढूँढ़ते हैं कि इनकी कन्या को उत्तराधिकार के विपुल धन की स्वामिनी तथा बहुमूल्य आभूषणों से सुशोभित बनने का अवसर मिले। उन्हें भी अपना यह दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा। विवाह योग्य लड़के और लड़की यदि साहस से कार्य लें तो इस सत्यानाशी प्रथा को बदलने तथा गलत तरीके से सोचने वाले माँ–बापों को सही तरीके से सोचने के लिए विवश कर सकते हैं। समय की माँग है अब दहेज बन्द होना चाहिए। प्रसन्नता की बात है कि हमारी ही भाँति अनेक बुद्धिमान व्यक्ति सोच रहे हैं और दहेज के विरुद्ध तगड़ा मोर्चा लगाने की तैयारी में संलग्न हैं।

जरा फिर सोचिए और स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर खोजिए...

1. विश्व में लगभग 52 मुस्लिम देश हैं, एक मुस्लिम देश का नाम बतायें जो हज के लिए सब्सिडी देता हो?
2. एक मुस्लिम देश बताईये जहाँ हिन्दुओं के लिए विशेष कानून हैं। जैसे कि भारत में मुसलमानों के लिए है?
3. किसी एक देश का नाम बताईये, जहाँ 85% बहुसंख्यकों को "याचना" करनी पड़ती है, 15% अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करने के लिए?
4. एक मुस्लिम देश का नाम बताइये, जहाँ का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री गैर–मुस्लिम है?
5. किसी 'मुल्ला' या "मौलवी" का नाम बताइये, जिसने आतंकवादियों के खिलाफ फतवा जारी किया हो?
6. महाराष्ट्र, बिहार, केरल जैसे हिन्दू बहुल राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री हो चुके हैं, क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मुस्लिम बहुत राज्य "कश्मीर" में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री हो सकता है?
7. 1947 में आजादी के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू जनसंख्या 24% थी अब वह घटकर 1.7 प्रतिशत रह गई है, उस समय तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब आज का अहसान फरामोश बांग्लादेश) में हिन्दू जनसंख्या 30% थी जो अब 7% से भी कम हो गई है। क्या हुआ गुमशुदा हिन्दुओं का? क्या वहाँ (और यहाँ भी) हिन्दुओं के कोई मानवाधिकार हैं?
8. इस दौरान भारत में मुस्लिम जनसंख्या कट्टरवादी है?
9. यदि हिन्दू असहिष्णु हैं तो कैसे हमारे यहाँ मुस्लिम सड़कों पर नमाज पढ़ते रहते हैं? लाउडस्पीकर पर दिन भर चिल्लाते रहते हैं कि "अल्लाह के सिवाय" और कोई शक्ति नहीं है"?
10. सोमनाथ मन्दिर के जोर्णोद्धार के लिए देश के पैसे का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए ऐसा गाँधीजी ने कहा था, लेकिन 1948 में ही दिल्ली की मस्जिदों को सरकारी मदद से बनवाने के लिए उन्होंने नेहरू और पटेल पर दबाव बनाया, क्यों?
11. कश्मीर, नागालैण्ड अरूणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में हिन्दू अल्पसंख्यक है, क्या उन्हें विशेष सुविधा मिलती है?
12. हज करने के लिए सब्सिडी मिलती है जबकि मानसरोवर और अमरनाथ जाने पर टैक्स देना पड़ता है, क्यों?
13. मदरसे और क्रिश्चियन स्कूल अपने–अपने स्कूलों में बाईबल और कुरान पढ़ा सकते हैं तो फिर सरस्वती शिशु मन्दिर में और बाकी स्कूलों में गीता और रामायण क्यों नही पढ़ाई जा सकती?
14. गोधरा के बाद मीडिया मे जो हंगामा बरपा, वैसा हंगामा कश्मीर के चार लाख हिन्दुओं की मौत और पलायन पर क्यों नहीं होता?

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

conitnued from page no. 9 **BALANCED ARGUMENTS...**

The reality is that most of the web based applications are running without any license or regulations. In case of any fraud or misuse of personal information, the culprits cannot be traced as the government has no records of such OTTs due to lack of any set guidelines and regulations.

While net neutrality cannot be denied, a framework to regulate and protect consumer interests is needed. PM Modi has said that everyone should have access to the internet. TRAI can make a recommendation under TRAI act but the final decision rests with the government.

शेष पृष्ठ 6 का **क्या सेकुलरवाद का झण्डा.....**

वही सानिया मिर्जा थी जिसने सन २०१२ के ओलम्पिक खेलों में तिरंगा झण्डा उठाने से इंकार कर दिया था। इस विवाद में तेलंगाना के भाजपा नेता डॉ. लक्ष्मण के पाकिस्तान के विरुद्ध टिप्पणी करने मात्र से हमारे अंतर्राष्ट्रीय अंग्रेजी मीडिया ने उन्हें ''ईडियट'' और धर्मान्ध या 'बिगोट'' तक कहा था। इसी तेलंगाना की संसद सदस्य के. कविता हमारे अंग्रेजी मीडिया से कह रही थी कि किस तरह १९४७ में कश्मीर व तेलंगाना भारतीय संघ के सदस्य नहीं, व स्वतंत्र राष्ट्र थे जिन्हें भारत में बलात विलय किया गया था। यह सब देश के सेकुलर मीडिया की शर्मनाक देन है जिसे हर भारतीय को जानना जरूरी है।

शेष पृष्ठ 1 का **सीजफायर उल्लंघन तत्काल....**

समूहों की मदद जोर–शोर से करनी चाहिये। साथ–ही–साथ भारत में आतंक फैलानेवाले आतंकियों के पाकिस्तान स्थित प्रशिक्षण शिविरों व ठिकानों को समाप्त कर देना चाहिये। वहीं हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के अबुधाबी मस्जिद जाने का विरोध करनेवाले लोगों की तीव्र निंदा करते हुए उनलोगों को संयुक्त अरब अमीरात चले जाने का सुझाव दिया है।उन्होंने कहा है कि जिन लोगों को भारत से प्रेम नहीं है वे कृपा करके भारत छोड़ दें।श्री शर्मा ने कहा कि भारत में रहकर भारतभूमि के साथ गद्दारी बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठं मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का **राजनीतिक मास्टरस्ट्रोक.....**

विशेषज्ञ मौजूद हैं, जिन्हें अगर सहूलियतें दी जाएँ तो भारत में करोड़ों लोगों को रहने का आसरा मिल सकता है। सच कहा जाय तो प्रधानमंत्री की यूएई की इस यात्रा से उनके द्वारा २०२२ में प्रत्येक भारतीय को घर दिए जाने का वादा पूरा होने का मजबूत विश्वास और आधार एक साथ दिखता है। प्रधानमंत्री की इस यात्रा से उसकी विदेश नीति, विशेषकर ईरान को लेकर, बदलाव के संकेत भी मिल रहे हैं। इस सम्बन्ध में पिछले दिनों अमेरिकी प्रशासन द्वारा की गयी एक टिप्पणी महत्वपूर्ण है, जिसमें भारत ने अपने हितों की कीमत पर अमेरिका की ईरान नीति का समर्थन किया था, ऐसा वक्तव्य आया था। मनमोहन सिंह द्वारा अमेरिका से परमाणु करार किये जाने के बाद से ही ईरान और भारत के सम्बन्ध असहज होना शुरू हो गए थे, जबकि इस इस्लामिक देश के दूर जाने से होने वाले नुक्सान की भरपाई की चिंता अब २०१५ में की गयी दिख रही है। कूटनीति में, जब आपसे एक मित्र दूर जाता है तो यह बेहद आवश्यक है कि उसी कद का या उससे बड़े कद के दुसरे संबंधों को अपनी झौली में डाला जाय। हालाँकि, विदेश नीति से सम्बंधित प्रभावों के अध्ययन में जल्दबाजी नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि आने वाले समय में ऊंट किस करवट बैठेगा, यह समझने के लिए इन्तजार ही किया जा सकता है। प्रधानमंत्री की इन उपलब्धियों के अतिरिक्त, एक मुस्लिम देश में हिन्दू मंदिर के लिए वहां की सरकार द्वारा जमीन उपलब्ध कराना नरेंद्र मोदी की आरएसएस और भाजपा में स्वीकार्यता को और मजबूत ही करेगा, साथ ही साथ वहां की मस्जिद में जाना उनके आलोचकों का मुंह भी जबरदस्त तरीके से बंद करेगा। उनके इस दांव पर प्रतिक्रियाएं भी आनी शुरू हो गयी हैं। आप नेता संजय सिंह ने कहा,"वाह रे मोदी जी भले ही भारत की मस्जिद में आप कभी नहीं गए लेकिन विदेश जाते ही आपको सर्वधर्मसमभाव ज्ञान प्राप्त हो गया।" कांग्रेस नेता अखिल सिंह ने मोदी के दुबई की मस्जिद दौरे का स्वागत किया है, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने मोदी पर कटाक्ष करते हुए कहा, "मोदी टोपी पहनने से इनकार करते रहे हैं, लेकिन अब मस्जिद का दौरा करना स्वागत योग्य है। कम से कम सदबुद्धि तो आई।" उमर अब्दुल्लाह ने ट्वीट करके कहा कि आबू धाबी की मस्जिद सैलानियों के लिए बड़ा आकर्षण है। पीएम का यहां जाना उसी तरह की सैर है जैसा वो चीन की टेरकोट आर्मी के पुतलों को छू–छू कर देख रहे थे। खैर, राजनीतिक विरोधियों की यह टिप्पणियाँ अपने आप में बताने के लिए पर्याप्त हैं कि प्रधानमंत्री की महत्वकांक्षी यूएई यात्रा ने उम्मीद से कहीं ज्यादा हासिल किया है, हालाँकि इसके वास्तविक प्रभावों के अध्ययन में अभी समय शेष है, पर इस बात से किसे इंकार हो सकता है कि नरेंद्र मोदी की प्रत्येक विदेश–यात्रा का कम से कम इतना प्रभाव तो होता ही है कि वहां के प्रवासी भारतीय नरेंद्र मोदी के 'मैडिसन स्क्वायर' जैसे प्रयासों से एक छत्र के नीचे आ खड़े होते हैं और एक अनजान देश में रोजी–रोटी कमाने वालों के लिए एक विशाल हिम्मत मिलती है सो अलग! दुबई के क्रिकेट स्टेडियम में ठीक ऐसा ही प्रोग्राम यूएई में रहने वाले भारतीयों का किस कदर उत्साह बढ़ाएगा, इस बात को सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है, हालाँकि यूएई सहित तमाम खाड़ी देशों में रहने वाले भारतीयों की स्थिति पर और भी बातचीत करने की गुंजाइश बनी रहेगी, विशेषकर गैर–इस्लामिक लोगों के लिए। नरेंद्र मोदी की यह यात्रा इस मायने में भी और दुसरे मायनों में भी 'मास्टर–स्ट्रोक' ही कही जा सकती है। किसी को कोई शक हो तो वह अपने दिमाग की बत्ती फिर से जलाये !!

शेष पृष्ठ 1 का **२०२० तक भारत को.....**

के हिस्से पर अगले पांच साल के अंदर कब्जा कर अपना खिलाफत कायम करने की है। इसके दायरे में स्पेन से लेकर चीन तक को लाने का मंसूबा है। नक्शे के मुताबिक स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस के हिस्से को अरबी में अंदालुस नाम दिया गया है जिस पर मूरों ने आठवीं से १५ वीं सदी के बीच कब्जा किया था जबकि भारतीय उपमहाद्वीप को खुरासान नाम दिया गया है। जानकारी के मुताबिक आईएसआईएस उन सभी क्षेत्रों पर कब्जा करना चाहता है जिन्हें वे इस्लामी दुनिया के रूप में देखते हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि आई एस को रोकने के लिए सभी आवश्यक उपाय शीघ्र करना चाहिए।

दिनांक 02 सितम्बर से 08 सितम्बर 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
शिक्षक दिवस	05 सितम्बर	शनिवार
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	05 सितम्बर	शनिवार
अजा एकादशी	08 सितम्बर	मंगलवार

यह भी सच है

सुकून देती हैं बर्फ से लदी ये खूबसूरत वादियाँ

गर्मियाँ शुरू हो गई हैं और बच्चों की मस्तियाँ भी। दिल्ली में चिलचिलाती धूप से छुटकारा पाने और अपनों के साथ कुछ समय बिताने के लिए हम शांत और स्वच्छ वातावरण की तलाश करते हैं। उत्तर भारत में ऐसे कई हिल स्टेशन हैं जहाँ आप गर्मी से राहत पा सकते हैं और परिवार व दोस्तों के साथ फुर्सत के दो पल बिता सकते हैं। तो आइए आपको भी ऐसी कुछ जगहों पर ले चलते हैं, जो गर्मियों में पर्यटन के लिए मशहूर हैं।

कश्मीर – पृथ्वी का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। हिमालय और पीर पंजाब पर्वत श्रृंखला के बीच बसा कश्मीर उत्तर भारत के मुख्य हिल स्टेशनों में से एक है। यहाँ का डल झील बेहतरीन पर्यटक स्थलों में से है। साथ ही इसके किनारे बसा हजरत–बल–मस्जिद दर्शनीय है। झेलम के किनारे बसा भवानी का मंदिर, शंकराचार्य मंदिर, मार्तडय सूर्य मंदिर और शालीमार गार्डन बेहतरीन पर्यटक स्थलों में से एक हैं।

केदारनाथ – उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग में बसे केदारनाथ की यात्रा अपने आप में पावन है। ३,५८४ मीटर की ऊँचाई पर स्थित चारों धामों में से यह हिंदुओं का सबसे पवित्र धाम है। बारह ज्योतिर्लिंग में सबसे पवित्र ज्योतिर्लिंग यहीं देखने को मिलता है। मंदिर के पास मंदाकिनी नदी का कल–कल बहता पानी मन को शांति देता है। भगवान शिव के दर्शन के लिए दूर–दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं।

मनाली–समुद्रतल से १६५० मीटर की ऊँचाई पर बसा है हिमाचल प्रदेश का मनाली। यहाँ के खूबसूरत पहाड़ पर्यटकों की पहली पसंद हैं। हिमाचल का राजधानी शिमला से २५० किलोमीटर दूर कुल्लू–मनाली के सुंदर दृश्य, गार्डन, पहाड़ों और सेब के बाग पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। हिमालय नेशनल पार्क, हिंडिंबा मंदिर, सोलांग घाटी, रोहतांग पास, रघुनाथ मंदिर और जगन्नाथी देवी मंदिर दर्शनीय हैं।

श्रीनगर–कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी है श्रीनगर। इस खूबसूरत शहर में पर्यटन के लिहाज से देखने के लिए बहुत कुछ है खूबसूरत झील, ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल और पुरातत्व से धनी है श्रीनगर। पर्यटकों में यहाँ का शालीमार बाग, शाही चश्मा और परी महल बेहद खास है।

शिमला–२२०२ मीटर की ऊँचाई पर बसे इस खूबसूरत इलाके को पहाड़ों की रानी कहा जाता है। शिमला में सबसे बेहतरीन आइस स्केटिंग का मजा लिया जा सकता है। हर सर्दियों में होने वाली बर्फबारी इसे और भी खूबसूरत बना देती है। हर तरफ फैली बर्फ की सफेद चादर इस शहर को प्राकृतिक खूबसूरती देती है। शिमला ट्रेकिंग के लिए भी प्रसिद्ध है।

लेह–हिमालय के बीच स्थित है लेह। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता कुदरत का वरदान है। यहाँ बौद्ध धर्म और मस्जिद के अनेक स्मारक हैं। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियाँ लेह को और भी खूबसूरत बनाती हैं। लेह की सुंदरता देखने के साथ–साथ यहाँ पर्यटक ट्रेकिंग का आनंद भी ले सकते हैं।

मसूरी–२५०० मीटर की ऊँचाई पर बसा मसूरी प्राकृतिक दृश्यों का धनी है। १८२० में ब्रिटिश की अंग्रेजी सेना यहाँ की बेहतरीन खूबसूरती से प्रभावित थी। उसने यहाँ अपने लिए आवास बनाए। यहाँ की यात्रा उन लोगों के लिए सुखद है जो दिल्ली और दूसरे स्थानों की गर्मी से राहत पाना चाहते हैं। प्रकृति ने मसूरी को खूबसूरती वरदान में दिया है।

नैनीताल–उत्तराखंड के कुमाऊं के निचली पहाड़ी क्षेत्र में बसा है नैनीताल। नैनी झील के लिए मशहूर नैनीताल को झीलों का जिला कहा जाता है। नैनीताल की कई घाटियों में नाशपाती के आकार की झील देखने को मिलती है। यह झील चारों तरफ से पहाड़ों से घिरी है और पर्यटकों के बीच आकर्षण का केंद्र भी है। नैनीताल का नाम यहाँ की प्रसिद्ध देवी नैना के नाम पर पड़ा है। मुख्य पर्यटक स्थल में टिफिन टॉप, नैनी लेक, नैना पीक वगैरह हैं।

उत्तर भारत में इसके अलावा और भी कई ऐसे पर्वतीय क्षेत्र हैं जहाँ आप सुकून के कुछ पल बिता सकते हैं। गर्मियों की चिलचिलाती गर्मी से कुछ आराम चाहिए तो कर आइए इन हिल स्टेशनों की सैर।

कबिरा खड़ा बजार में

बयानवीर भी हुए मौन

मोदी सरकार पूर्ण बहुमत के मद में चूर होकर तानाशाही पर उतर आई है। ऐसा पहले केवल विपक्ष के लोग फरमा रहे थे, अब तो लोगों की जुबान पर भी यह लब्ज आ गये हैं। लेकिन संसद के मानसून सत्र में जिस तरह का रवैया सरकार का है, उससे इसकी पुस्टि भी हो रही है। मानसून सत्र के पहले जिस तरह सुषमा स्वराज व वसुंधरा राजे द्वारा भगोड़े ललित मोदी की मदद के मामले का पदार्फाश हुआ और दूसरी ओर मध्यप्रदेश सरकार के व्यापमं घोटाले में बुरी तरह लिप्त होने का मामला उठा, उसके बाद स्वाभाविक ही था कि विपक्षी दल सरकार से इन लोगों के इस्तीफे की मांग करते। भ्रष्टाचार मुक्त शासन का दंभ भरने वाली मोदी सरकार गंभीर भ्रष्टाचार के इन मामलों पर फंसे लोगों के बचाव की कोशिश में ही लगी है, इस्तीफा लेना तो दूर की बात है। हब हमारे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की राह चल पड़े हैं। पूरी तरह मौन। बस रेडियो पर मन की बात, और संसद में खामोश। एक बात जो गांव की जनता को भी समझ आ रहा है कि सत्ता पक्ष अपनी कहने के लिए उद्यत है, किंतु विपक्ष की बातों पर वह जरा भी तवज्जो नहीं देना चाहता। इसका एक बड़ा कारण पूर्ण बहुमत का गुमान है। तीन अगस्त को संसद के दोनों सदनों में जो घटनाक्रम हुआ, वह अभूतपूर्व नहीं किंतु लोकतंत्र के लिए अत्यंत अप्रिय, अशोभनीय अवश्य था। राज्यसभा में विदेश मंत्री ने आसन की अनुमति के बिना बयान दिया, जबकि लोकसभा में अध्यक्ष सुमित्र महाजन ने २५ कांग्रेसी सांसदों को पांच दिन के लिए निलंबित कर दिया। इसका आशय यही है कि अब ये सांसद अगले सप्ताह ही सदन की कार्यवाही में हिस्सा ले सकेंगे। इसके पीछे भी हमारी सरकार की एक चाल है। सदन में कांग्रेस के ४४ सांसद हैं और इनमें से २५ के निलंबन का राजनीतिक लाभ भाजपा को मिलेगा। संसद हंगामा करने के लिए नहीं, चर्चा के लिए है। यह बात भी बिल्कुल उचित है। लेकिन इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि इस बार सदन में जो हंगामा खड़ा हुआ है, उसकी जवाबदेही किसकी है। क्या कांग्रेस या अन्य विपक्षी दल अकारण सत्र को बाधित कर रहे हैं और कामकाज नहीं करने दे रहे या उनकी मांगों के पीछे कोई ठोस आधार है। जिन लोगों पर भ्रष्टाचार के, बल्कि गंभीर अपराध से जुड़े आरोप लगे हैं। उनके इस्तीफे की मांग करना क्या गलत है। बीजेपी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर मौन व्रत रखने का आरोप लगाती रही थी और अब मौका कांग्रेस को मिला है और वह मोदी को मौन मोदी कह रही है। ये बात तो सही है कि सब यह सुनना चाहते हैं कि प्रधानमंत्री इस मुद्दे पर क्या सोचते हैं। बीजेपी इसलिए चुप हो गई कि यदि इस मामले में वसुंधरा राजे पर कोई कारवाई की तो राजस्थान में पार्टी संकट में आ जाएगी क्योंकि राजस्थान बीजेपी खासकर विधायक दल वसुंधरा के पीछे पूरी तरह से खड़ा है। वसुंधरा और केन्द्रीय बीजेपी के बीच टकराव कोई नया नहीं है। पहले भी जब एक बार बीजेपी वसुंधरा को विपक्ष के नेता पद से हटाना चाहती थी तो वसुंधरा ने एक तरह से बगावत कर दी थी और अपने विधायकों को दिल्ली भेज दिया था। कई जानकार मानते हैं कि वसुंधरा पर कार्रवाई करने पर राजस्थान में बीजेपी टूट सकती है। दूसरे यदि वसुंधरा पर कार्रवाई हुई तो सुषमा का बचाव करना सरकार के लिए मुश्किल हो जाएगा और फिर बात प्रधानमंत्री तक जाएगी। ऐसे हालात में प्रधानमंत्री की चुप्पी थोड़ी असहज लग रही है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 26 अगस्त से 01 सितम्बर 2015 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।